क़ुरान और धार्मिक मतभेद

क़ुरान और धार्मिक मतभेद

अर्थात्

मौलाना अबुल-कलाम आज़ाद

लिखित

"तर्जुमानुल-क़ुरआन"

के एक अध्याय का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक

सय्यद ज़हूरुल हुसैन हाशिमी भागलपुरी

भूमिका-लेखक

डॉ० राजेन्द्रप्रसाद

१९५५

आत्माराम एण्ड संस

प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता

काश्मीरी गेट

दिल्ली-६

प्रकाशक
रामलाल पुरी
आत्माराम एण्ड संस
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

दूसरा संस्करण

मुद्रक
श्यामकुमार गर्ग
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस
क्वीस रोड, दिल्ली-६

विषय-सूची

भूमिका

मुझे हजारीबाग जेल मे मौलाना अबुलकलाम आजाद-कृत उर्दू टीका और भाष्य के साथ कुरान पढने का सौभाग्य हुआ। खेद है कि अभी तक पूरी पुस्तक छपकर नही निकली। और जो अश छपा है उसी के देखने से ऐसी धारणा हुई कि यदि इस पुस्तक को हिन्दू पढ सकेंगे तो देश का बडा उपकार होगा।

मौलवी सय्यद जहूरुल हुसैन हाशिमी का विचार हुआ कि इसका वह अंश, जिसमे इस्लाम का अन्य धर्मो के साथ सम्बन्ध दर्शाया गया है, अविलम्ब हिन्दी मे अनुवादित करके हिन्दू जनता के सामने रखा जाय। उन्होने यह कार्य कुछ मित्रो के परामर्श और सहायता से आरम्भ भी कर दिया। कुछ दिनो में यह काम समाप्त हो गया, और मुझे भी उर्दू तथा हिन्दी प्रतियो के देखने का सुअवसर मिला। मेरा विश्वास है कि इसे पढकर हिन्दीभाषी इस्लाम के महत्व और उसकी उदारता को समझ सकेंगे और बहुत सी गलतफहमियाँ जो फैली हुई हैं, दूर हो सकेंगी।

भारतवर्ष मे हिन्दू-मुसलिम समस्या बहुत जटिल दीख पडती है। इसके बहुतेरे कारण हैं—ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक। दोनो जातियाँ एक दूसरे के धर्म के महत्त्व से अनभिज्ञ हैं और जानकारी प्राप्त करने की उन्हे विशेष सुविधा भी प्राप्त नही है। ऐसी अवस्था मे दोनो एक दूसरे के धर्म सम्बन्धी विचारों को सन्देह की दृष्टि से देखती हैं, और सामाजिक तथा धार्मिक रीतियो के कारण स्थान-स्थान पर असहिष्णुता का प्रदर्शन करती हैं जिसका रूप कभी-कभी अत्यन्त भयकर और अमानुषिक हो जाया करता है।

इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि दोनों जातियो को इसका सुअवसर और प्रोत्साहन दिया जाय कि एक दूसरे के धर्म सम्बन्धी विचारो की जानकारी प्राप्त करे। अविद्या और अज्ञान अनेक अनर्थो का कारण हुआ करता है, और आज भारतवर्ष की इस जटिल समस्या के हल करने का एक साधन इस अविद्या और अज्ञान का दूर करना है। यह इस प्रकार की पुस्तको के प्रकाशन और

प्रचार से दूर हो सकता है जैसी मौलाना अबुलकलाम आजाद साहिब ने लिखी है। हिन्दुओ मे इस प्रकार का प्रयत्न एक दूसरे विद्वान् डाक्टर भगवानदास जी की लेखनी द्वारा हो रहा है।

सच पूछिए तो सभी धर्मों के सर्वोच्च सिद्धान्त थोड़े ही है और मिलते-जुलते है। सारे झगडे आचार-व्यवहार, रीति-नीति, रस्म-रिवाज मे भेद के कारण ही होते है। जैसा मौलाना साहिब ने दिखलाया है इनमे भेद होना अनिवार्य है, क्योकि देश-काल की विभिन्नता से और अलग-अलग जातियो के बीच धर्म के प्रचारित होने से सभी बातो मे समानता होना असम्भव था। जब ईश्वर के ससार मे दो मनुष्य अथवा कोई दो चीजे ठीक एक दूसरे के समान नही हैं और इस वैचित्र्य मे भी सुन्दरता और शक्ति झलकती है तो धर्मो के सभी आचार-व्यवहार, रस्म-रिवाज एक समान कैसे हो सकते है ? पर हमारी भूल यह है कि हम इन बाह्य आडम्बरो को—इन फुरूआत को—धर्म का मुख्य अङ्ग समझ बैठे है और इनके कारण एक दूसरे का सिर तोडकर ईश्वर के उन नियमो का गला घोटते है जो सब के लिए समान रूप से मान्य हैं।

आर्य-धर्म, जो आज हिन्दू-धर्म के नाम से अधिक प्रचलित है, उन्ही सिद्धान्तो को अनादि काल से मानता और प्रचारित करता आया है जिनको इस्लाम ने आज से १३५० वर्ष पूर्व फिर से प्रचारित किया। मौलाना आज़ाद साहिब ने प्रतिपादित किया है कि इस्लाम के द्रोही मुख्य सिद्धान्त है—एक, ईश्वर मे अटल विश्वास और दूसरा, सदाचार का जीवन। आर्य-ग्रन्थो से इसी आशय के अनेक प्रमाण उद्धृत किये जा सकते है, और जो इस विषय का विशेष रूप से अध्ययन करना चाहेगे उनको इसमे कोई कठिनाई नही होगी। यहाँ पर कुछ उद्धरण दिए जाते हैं जो इस विषय मे दोनो धर्मो के सामञ्जस्य को प्रमाणित करते है।

एवमाचारतो दृष्ट्वा धर्मस्य मुनयो गतिम्।
सर्वस्य तपसो मूलमाचारं जगृहुः परम्॥

—मनुस्मृति १। ११०

इस प्रकार मुनियो ने आचार से धर्म प्राप्त देखकर सब तपो के मूल आचार को ग्रहण किया है—

धृतिः क्षमादमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्यासत्यमक्रोधोदशकं धर्मलक्षणम् ॥

—मनु० ६ । ९२

धैर्य, क्षमा, दम (अर्थात् मन को रोकना), अस्तेय (चोरी न करना), शौच (बाहर-भीतर की शुद्धि), इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या (अर्थात् ब्रह्मविद्या), सत्य और अक्रोध—ये दस धर्म के लक्षण है ।

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
एतं सामासिकं धर्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनुः ॥

—मनु० १० । ६३

अहिसा, सत्य, चोरी न करना, पवित्रता और इन्द्रियनिग्रह, यह चारो वर्णो का सक्षिप्त धर्म मनु ने कहा है ।

सर्वेषां यः सुहृन्नित्यं सर्वेषां च हिते रतः ।
कर्म्मणा मनसा वाचा स धर्मं वेद जाजले ॥

महाभारत—शातिपर्व २६१ । ९

हे जाजले ! उसी ने धर्म को जाना जो कर्म से, मन से और वचन से सबका हित करने मे लगा हुआ है और जो सभी का नित्य स्नेही है ।

श्रीमद्भगवद्गीता मे तो बहुत से श्लोक मिलेगे जो इस विषय को प्रतिपादित करते हैं । यहाँ केवल बारहवे अध्याय की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है और उसी मे से कुछ वाक्य दिये जाते हैं—

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहंकारः समदुःख सुख.क्षमी ॥
सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः ।
मय्यर्पित मनो बुद्धिर्योमद्भक्त‌ः स मे प्रियः ॥
यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः ।
हर्षामर्ष भयोद्वेगैः मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥
अनपेक्षः शुचिर्दक्षः उदासीनो गतव्यथः ।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥

योे न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न कांक्षति ।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः ।।
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।
शीतोष्ण सुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ।।
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित् ।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ।।
ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते ।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ।।

—भ० गी० १२

जो किसी प्राणी से भी द्वेष न करे, जो सब के साथ मित्रता का बर्त्ताव करे, जो दयालु हो, जो ममता का त्याग करे, जो अहकार से रहित हो, जो दुःख-सुख को समान माने, जो क्षमाशील है, जो सदा सतोषी है, जिसने अपनी आत्मा को जीत लिया, जिसका निश्चय दृढ है, जिसने अपना मन और बुद्धि मुझ मे (ईश्वर मे) अर्पण कर दी है, जो मेरा भक्त है—ऐसा योगी मुझको प्यारा है ।

जिससे लोग उद्विग्न नही होते, और जिसे लोगो से उद्वेग नही होता, जो हर्ष, क्रोध, भय और घबराहट से मुक्त है—वह मुझे प्यारा है ।

जो किसी से कुछ इच्छा नही रखता, जो पवित्र है, कुशल है, उदासीन है, किसी बात का दु ख नही मानता, जिसने (काम्यफलो के) सब आरम्भो को त्याग दिया है—ऐसा मेरा भक्त मुझे प्यारा है ।

जो न हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोक करता है, न इच्छा करता है, जिसने भले और बुरे (दोनो तरह के कर्मफलो) का त्याग कर दिया है—ऐसा मेरा भक्त मुझे प्यारा है ।

जो शत्रु और मित्र के साथ समान व्यवहार करता है, जो मान और अपमान, सर्दी और गर्मी, सुख और दु ख मे समान रहता है, जो सगरहित (बेलौस) है, जिसके लिए निन्दा और स्तुति बराबर है, जो मौनी (मितभाषी) है, जहाँ-तहाँ से जो कुछ मिल जाय उसी से सतुष्ट रहता है, जिसका कोई रहने का स्थान नही, जिसकी बुद्धि स्थिर है—ऐसा मेरा भक्त मुझे प्यारा है ।

जो श्रद्धा के साथ ईश्वरपरायण होकर इस धर्मामृत का ठीक-ठीक सेवन करते है—ऐसे मेरे भक्त मुझे बहुत प्यारे है।

मौलाना ने एक विषय और भी प्रतिपादित किया है, और वह यह है कि ईश्वर ने समय-समय पर सभी देशो मे अपने पैगम्बर भेजे हैं जिन्होने धर्म की शिक्षा दी है। यह गीता के उन श्लोको से भी प्रतिपादित होता है जो चौथे अध्याय मे आये हैं।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥

गी० ४। ७, ८

हे अर्जुन ! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब-तब मै अवतार लेता हूँ। सज्जनो की रक्षा, दुर्जनो के विनाश और धर्म की पुनः-स्थापना के लिए मै युग-युग मे पैदा होता हूँ।

मै आशा करता हूँ कि हिन्दीभाषी इस छोटी पुस्तिका से लाभ उठावेगे और मौलाना अबुलकलाम आजाद कृत कुरान के पूरे भाष्य के हिन्दी-सस्करण का इन्तजार करेगे। मै यह भी आशा करता हूँ कि पूरे भाष्य को पढने की उनकी यह इच्छा शीघ्र ही पूरी होगी।

हजारीबाग सेन्ट्रल जेल
आषाढ़ कृष्ण ५, सम्वत् १९८९

राजेन्द्रप्रसाद

निवेदन

१९३२ ई० को जनवरी मे जब सत्याग्रह-आन्दोलन शुरू हुआ, तो बिहार प्रान्त के अन्य देश-सेवको के साथ मुझे भी गिरफ्तार होने की इज्जत हासिल हुई। मैं हजारीबाग जेल भेजा गया। वहाँ मुझे अभी थोडे ही दिन बीते थे कि मौलाना अबुलकलाम आजाद का "तर्जुमानुल-कुरआन" यानी कुरान का उर्दू भाष्य छपकर प्रकाशित हुआ, और उसकी एक प्रति जेल के अन्दर मुझे मिल गई। यह पुस्तक कैसी है और इसके अन्दर क्या अमूल्य रत्न भरे है, इसके लिए सिर्फ इतना कह देना काफी है कि यह मौ० अबुलकलाम आजाद के मस्तिष्क और कलम से निकली है। मौलाना आजाद हिन्दुस्तान के मुसलमान लेखको मे सर्वोच्च श्रेणी के लेखक माने जाते हैं, और उनके कलम से निकली हुई एक पक्ति उस श्रद्धा तथा प्रतिष्ठा के साथ पढी जाती है जो उर्दू भाषा के अन्य किसी लेखक को प्राप्त नही है।

जब इस पुस्तक की जेल के दोस्तो मे चर्चा हुई, तो सबने बडे शौक से इसका अध्ययन किया, और एक साथ सबको ख्याल हुआ कि अगर इसका हिन्दी मे अनुवाद हो जाय, तो इससे देश तथा साहित्य की बडी सेवा होगी।

हिन्दुस्तान मे एक हजार वर्ष से हिन्दुओ और मुसलमानो का साथ है। परमात्मा की यही इच्छा हुई कि दोनो धर्मो के माननेवाले एक ही देश मे बसे, और एक ही देश को अपनी मातृभूमि समझे। इसलिए जरूरी था कि हिन्दू-मुसलमान एक-दूसरे के धर्म और मजहब को भली भाँति समझते और एक-दूसरे का आदर करते। लेकिन बद-नसीबी से मौजूदा जमाने मे पृथकत्व और बेगानगी की कुछ ऐसी हवा चल गई है कि एक दूसरे को समझना तो दूर रहा, एक-दूसरे के खिलाफ़ तरह-तरह के पक्षपात और गलतफहमियाँ दोनो ओर के लोगो मे पैदा हो गई है, जिसका परिणाम यह है कि एकता की लगातार कोशिश करने पर भी हिन्दू-मुसलिम नाइत्तिफाकी और वैमनस्य रोज-ब-रोज बढते ही चले जाते हैं।

मुसलमानो ने अपने साहित्य के उत्कर्ष काल मे हिन्दुस्तान के धार्मिक ग्रन्थो

की खोज की थी। उन दिनो अबूमअशर फलकी, अबूरैहान अल-बीरूनी और शहरिस्तानी जैसे भारतीय साहित्य के पडित पैदा हुए। फिर जब हिन्दुस्तान मे इस्लामी राज्य कायम हो गया तो सुलतान फीरोजशाह, जैनुल-आबिदीन, अकबर, और दाराशिकोह जैसे साहित्य-प्रेमी बादशाहो ने हिन्दू धर्मग्रन्थ और हिन्दू साहित्य की पुस्तके फारसी भाषा मे अनुवाद कराई। इसी तरह हिन्दुओ मे भी इस्लामी साहित्य के जाननेवाले पैदा हुए जिन्होने इस्लामी अध्यात्म पर बहुत सी किताबे लिखी जो आज तक मौजूद है। इस्लाम और हिन्दू-धर्म के इसी पारस्परिक प्रेम और मेल-जोल का परिणाम था जिसने कबीर और गुरु नानक की अमूल्य शिक्षाओ का रूप धारण किया। लेकिन अफसोस है कि अब यह बाते स्वप्नवत् हो गई है। बेगानगी की इतनी चौडी नदी दोनो धर्मो के माननेवालो के बीच बहने लगी है कि एक किनारे पर बसनेवाला दूसरे किनारे की कोई खबर ही नही रखता।

वर्षो से मेरा विश्वास है कि हिन्दू-मुसलिम एकता सिर्फ राजनीतिक शिक्षा द्वारा कायम नही हो सकती। वास्तविक कारण जिसने आपस के प्रेम की राह मे रोडे बिछा दिये हैं धार्मिक सकीर्णता और मजहबी पक्षपात है। जब तक यह चीज दूर नही होगी, और सच्ची धार्मिक शिक्षा के द्वारा लोग एक दूसरे से इत्तिफाक और प्रेम न अनुभव करेगे, केवल राजनीतिक एकता का उपदेश कुछ फायदा न करेगा। सास्कृतिक (Cultural) एकता ही वास्तविक एकता है।

इस लक्ष्य तक पहुँचने की सिर्फ एक ही राह है, और वह यह है कि इस तरह के सहानुभूतियुक्त धार्मिक अनुसन्धान के परिणामो का साधारण जनता मे खूब प्रचार किया जाय, और कोशिश की जाय कि मुसलमान हिन्दू-धर्म को उसके असली रूप मे देख सके, और हिन्दू इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से जानकारी प्राप्त कर सके। जब दोनो गिरोह एक दूसरे के धर्म को पूर्ण रूप से समझ लेगे तो पारस्परिक द्वेषभाव तथा वैमनस्य अनायास दूर हो जायगा।

यही विचार था कि जो उस समय जेल मे तमाम दोस्तो के सामने आया, और उनके परामर्श से मैने "तर्जुमानुल-कुरआन" का हिन्दी अनुवाद करना शुरू कर दिया।

उस वक्त चूँकि पूरी किताब का अनुवाद करना कठिन था, इसलिए आपस की सलाह से तै पाया कि पहले इसके उस भाग का अनुवाद किया जाय जिसमे समस्त धर्मो के मूल सिद्धान्त के एक होने की व्याख्या की गई है। अनुवाद प्रारभ कर दिया गया और मेरी रिहाई से पहले वह समाप्त भी हो गया।

उर्दू से हिन्दी मे अनुवाद करना यद्यपि कठिन कार्य नही है, क्योकि भाषा एक ही है, फर्क सिर्फ इतना ही है कि उर्दू मे फारसी और अरबी के शब्द अधिक आते हैं और हिन्दी में सस्कृत के, और वह फारसी लिपि मे लिखी जाती है, यह देवनागरी मे, तथापि "तर्जुमानुल-कुरआन" के अनुवाद का काम इतना सहज न था। बडी मुश्किल जो इस काम मे पेश आई वह मौ० अबुलकलाम के उर्दू स्टाइल को हिन्दी भाषा मे खपाना था। जो लोग आज-कल के उर्दू साहित्य से जानकारी रखते है, वे जानते है कि मौ० अबुलकलाम आजाद ने उर्दू मे एक नई लेख-शैली पैदा की है, जिसका इस समय तक उनके सिवा कोई दूसरा मास्टर नही। उनकी लेख-शैली और ओज को हिन्दी मे कायम रखना अत्यन्त कठिन था। जहाँ तक मेरी शक्ति मे था मैंने अपने काबिल दोस्तो की मदद से इसकी कोशिश की, लेकिन मै स्वीकार करता हूँ कि मुझे इसमे सफलता नही मिली। यदि उनके लेख का भाव ही मेरे द्वारा ठीक-ठीक तौर पर हिन्दी मे आ सका हो तो इसी मे मै अपना सौभाग्य समझूँगा।

अनुवाद यद्यपि मेरे क़लम से हुआ है, लेकिन असल मे मुझसे ज्यादा यह मेरे जेल के दोस्तों और पूज्य महानुभावो की मेहनत और योग्यता का परिणाम है, और मेरा फर्ज है कि जिन महानुभावो ने खुशी और उत्साह के साथ हिन्दी अनुवाद की पुनरावृत्ति मे मेरी मदद की है उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करूँ। मेरे मुहतरम लीडर बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी, बिहार प्रान्तीय-कॉंग्रेस कमेटी के सहकारी मन्त्री बाबू मथुराप्रसाद जी, श्री बा० नारायण जी गौरैया कोठी सारन (भूतपूर्व सदस्य ऐसेम्बली), काशी विद्यापीठ के श्री राजवल्लभ जी, और मेरे दिली दोस्त बाबू मोतीलाल जी देवघरवाले, इस काम मे मदद देते रहे। इन महानुभावो की सहायता के बिना मेरा इस कार्य को सम्पूर्ण करना कठिन होता।

विशेषत मुझे बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी का शुक्रिया अदा करना है, जिन्होने पूरे अनुवाद को देखा, और अपने कलम से इसकी भूमिका लिख दी ।

जब मै मौलाना अबुलकलाम आजाद की खिदमत मे किताब का मसौदा लेकर कलकत्ते आया तो पण्डित बनारसीदास जी चतुर्वेदी, सम्पादक 'विशाल भारत', से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके दर्शन ने मेरे हृदय मे उत्साह की लहर दौडा दी। उन्होने अपने अमूल्य परामर्श और हर प्रकार की सहायता का वचन देकर मुझे प्रेमसूत्र मे बाँध लिया। मै उनका अत्यन्त ऋणी हूँ। उनकी ओर कृतज्ञता प्रकट कर सकना मेरे लिए असम्भव है—एक हृदय है जो मै उनकी सेवा मे अर्पण करता हूँ।

अब मै पाठको का ध्यान चन्द आवश्यक बातो की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

(१) इस ग्रन्थ मे कुरान की शिक्षा जो कुछ प्रकट की गई है, वह एक ऐसे विख्यात विद्वान् की लेखनी से निकली है जो आज न सिर्फ हिन्दुस्तान के मुसलमानो मे बल्कि बाहर की इस्लामी दुनिया मे भी इस्लाम के धार्मिक ग्रन्थो का एक बहुत बडा पण्डित माना जाता है। कुरान के तत्त्वज्ञान के उन जैसे ज्ञाता हिन्दुस्तान मे अत्यन्त कम विद्यमान हैं, यह बात विद्वत् समाज मे निर्विवाद मान ली गई है। भारतीय मुसलमानो मे एक बडी सख्या ऐसे लोगो की मौजूद है जो राजनीतिक मामले मे मौलाना से सहमत नही है, लेकिन वे भी इस्लाम के धार्मिक साहित्य और विशेषकर कुरान के विषय मे मुक्तकण्ठ से मौलाना को प्रमाण मानते हैं। इसलिए यह कहना अत्युक्ति न होगा कि प्रामाणिकता की दृष्टि से इस पुस्तक का स्थान बहुत ऊँचा है।

(२) आज कल प्रत्येक धर्म के अनुयायियो मे नवीन विचार के कुछ लोग ऐसे पैदा हो गये है जो प्राचीन धर्म-ग्रन्थो के अर्थो को खीच-तान कर आधुनिक युग के नवीन आविष्कारो से मिला देना चाहते है। वेद, तौरात, इजील और कुरान के बारे मे इस दृष्टि से बहुत कुछ कहा जा चुका है, और कई लोग तो इतनी दूर चले गये है कि उनके नजदीक साइन्स के सभी नये-नये आविष्कार और उसकी तरक्कियाँ भी वेद, तौरात, इजील और कुरान मे मौजूद हैं!

लेकिन मौलाना अबुलकलाम आजाद इस ख्याल के विरोधी है। उन्होने स्वय "तर्जुमानुल-कुरान" की भूमिका मे लिखा है कि इस तरह की कोशिश निरर्थक ही नही है बल्कि दियानतदारी और सच्चाई का खून करना भी है। अगर हम जानकारी और सच्चाई के साथ धार्मिक खोज करना चाहते है तो हमे चाहिए कि धार्मिक ग्रन्थो का बिल्कुल निष्पक्ष होकर अध्ययन करे, और उनका वही मतलब ले जो उनकी भाषा और वाक्यो का बिना खीच-तान के हो सकता है, और जैसा उनके माननेवालो ने हमेशा समझा है।

यही वजह है कि वह जो कुछ लिखते हैं उसके साथ ही कुरान की असल आयत दे देते है, ताकि हर व्यक्ति खुद फैसला कर ले कि जो मतलब पेश किया गया है, वह असल कुरान मे मौजूद है या नही।

(३) मौलाना ने कुरान की शिक्षा को बतलाते हुए यह सिद्धान्त पेश किया है कि समस्त धर्मो का मूलतत्त्व एक ही है, एक ही तरह पर सारी कौमो और मुल्को को ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हुआ है, और सभी तरीके असल मे सच है। अगर सब धर्मो के माननेवाले इसको ठीक तौर पर समझ ले, तो धर्म का सारा झगडा एक क्षण मे खतम हो जाय और ससार को उसकी वह खोई हुई सम्पत्ति मिल जाय जिसके बिना कभी अमन और शाति स्थापित नही हो सकती। बदनसीबी से आज हमारे देश मे सब से अधिक अज्ञानता इसी विषय की है, और मुल्क का सबसे बड़ा सेवक वह है जो इस हकीकत को लोगो के दिलो मे उतार दे।

अफसोस यह है कि इस किस्म की किताबो को आम तौर पर प्रकाशित करने और उनके प्रचार करने का हमारे मुल्क मे कोई इन्तजाम नही। लोग दूसरे-दूसरे कामो के पीछे पडे हैं, लेकिन इस काम के लिए जो सारे कामो की जड़ है, किसी को फिक्र नही। आवश्यकता थी कि मौलाना आजाद की यह पुस्तक हजारो की सख्या मे मुसलमानो के बीच बाँटी जाती, और उसी तरह उसका हिन्दी अनुवाद भी हिन्दू भाइयो मे बाँटा जाता। यदि इस प्रकार का साहित्य देश के शिक्षित लोगो मे वितरण हो सकता, तो फिर थोडे समय के अन्दर देश का वायुमण्डल ही बदल जाता और उसके सारे दुख दूर हो

जाते। हमारे मुल्क का मुख्य रोग असली धार्मिक सिद्धान्तो की अज्ञानता है। जब तक इसका इलाज नही होता, तब तक कोई राजनीतिक समझौता (पैक्ट) या सुधार हमारी इस मातृभूमि को शान्ति प्रदान करने मे समर्थ न हो सकेंगे।

ख़ाकसार—

ज़हूरुल हुसैन हाशिमी भागलपुरी

सेन्ट्रल जेल, हज़ारीबाग़

तुममे से हर एक गिरोह के लिए हमने (अलग-अलग) धार्मिक नियम और (अलग-अलग) रास्ते ठहरा दिये है। अगर खुदा चाहता तो तुम सब को एक ही सम्प्रदाय बना देता, लेकिन (उसने ऐसा नही किया) इसलिए कि जो कुछ तुम्हे दिया गया है उसी में तुम्हारी परीक्षा करे। बस नेकी की राह मे एक दूसरे से आगे बढ निकलने की कोशिश करो। अंत मे तुम सब को अल्लाह की तरफ लौटना है। फिर वह तुम्हें बतलायेगा कि जिन बातों में एक दूसरे से भिन्नता रखते थे उनकी अस्लीयत क्या है।

—सूरा ५.५२।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. हिदायत (ज्ञान-विकास)

हिदायत

हिदायत का अर्थ है पथ-प्रदर्शन, राह दिखाना, या राह पर लगा देना। अब हम हिदायत के उन भिन्न दरजो और किस्मो पर नजर डालना चाहते है जिनका जिक्र कुरान मे आया है। इनमें 'वही' (ईश्वर-प्रेरणा) और 'नबुव्वत' (ईश्वरीय आदेशो का प्रचार), इन दोनों का एक खास दरजा है।

उस पालनकर्त्ता परमात्मा ने जिस तरह सब प्राणियों को उपयुक्त शरीर और शक्तियाँ प्रदान की है उसी तरह उनके पथ-प्रदर्शन के लिए भी स्वाभाविक साधन पैदा कर दिये है। यही स्वाभाविक पथ-प्रदर्शन भूत-मात्र को जीवित रहने और अपने जीवन के आधार ढूँढ़ने के मार्ग पर लगाता है और उन्हे जीवन के आवश्यक साधनों की खोज मे प्रवृत्त करता है। अगर यह स्वाभाविक पथ-प्रदर्शन मौजूद न होता तो असम्भव था कि कोई भी प्राणी जीवन और उसे क़ायम रखने का सामान मुहैया कर सकता। कुरान ने इसी सच्चाई की ओर बार-बार ध्यान दिलाया है। वह कहता है कि भूत-मात्र के जन्म से लेकर उसके परिपक्व होने तक कई दरजे है, जिनमें आखिरी दरजा हिदायत का है। सूरा ८७ मे क्रमानुसार चार दरजों का ज़िक्र आया है।

الذی خلق فسوی والذی
قدر فهدی

वह प्रतिपालक जिसने हर चीज पैदा की, फिर उसे दुरुस्त किया, फिर हर एक के लिए उसका क्षेत्र निश्चित कर दिया, और फिर उनके साम (कर्म का) पथ खोल दिया।

—सू० ८७, आयत २

अर्थात् प्रत्येक सम्भूत पदार्थ की चार अवस्थाएँ है सृष्टि (तखलीक), दुरुस्ती (तसवीय्या), क्षेत्र-निर्देश (तक़दीर), और पथ-प्रदर्शन (हिदायत)।

सृष्टि का अर्थ है अव्यक्त के व्यक्त होना। दुरुस्ती (तसवीय्या) का अर्थ है हर चीज को जिस तरह होना चाहिए ठीक उसी तरह उसे दुरुस्त करना या सजाना। तकदीर का अर्थ है क्षेत्र निश्चित करना। हिदायत यानी पथ-प्रदर्शन का अर्थ है प्रत्येक प्राणी के लिए जीवन और उसके साधन के मार्गो का निर्देश करना। जैसे, पक्षी की योनि को ही लीजिए। पक्षी के अस्तित्व का व्यक्त होना उसकी सृष्टि (तखलीक) है। उसकी भीतरी और बाहरी शक्तियो का इस प्रकार विकसित होना जिससे उसमे शारीरिक सगठन और सामजस्य आ जाय दुरुस्ती (तसवीय्या) है। उसकी भीतरी और बाहरी शक्तियो की क्रिया के लिए एक क्षेत्र या सीमा बाँध देना, जिससे वह बाहर न जा सके, तकदीर है। मसलन्, पक्षी हवा मे ही उड़ेगे; मछलियो की तरह पानी मे तैरेगे नही। और उनमें अन्त.प्रवृत्ति (वुजदान) और इन्द्रियो (हवास) की रोशनी पैदा होना जिससे उनको अपना जीवन और अस्तित्व क़ायम रखने का ज्ञान प्राप्त होता

है और जिससे वे जीवन के साधन ढूँढते और प्राप्त करते है, हिदायत यानी पथ-प्रदर्शन है।

कुरान कहता है कि ईश्वर की पालन-शक्ति की सार्थकता इसी मे थी कि जिस तरह उसने हर एक प्राणी को उसका स्थूल रूप प्रदान किया, भीतरी और बाहरी शक्तियाँ दी, उसका कर्मक्षेत्र निश्चित कर दिया, उसी तरह उसके लिए हिदायत यानी पथ-प्रदर्शन के साधन भी प्रस्तुत कर दे।

ربنا الذی اعطی کل شیءٍ
خلقه ثم هدی

हमारा प्रतिपालक वह है जिसने हर चीज को रूप देकर उसके सामने उसका कर्मक्षेत्र खोल दिया।

—सू० २०, आ० ५२

واذ قال ابراهیم لابیه و
قومه اننی براء مما تعبدون
الا الذی فطرنی فانه سیهدین

और जब इब्राहीम ने अपने पिता और अपनी कौम के लोगों से कहा था कि (स्मरण रखो) तुम जिन (देवताओ) की उपासना करते हो, उससे मुझे कोई सरोकार नही। मेरा सम्बन्ध तो सिर्फ उस प्रभु से है जिसने मुझे पैदा किया और वही मेरा पथ-प्रदर्शक होगा।

—सू० ४३, आ० २५

हज़रत इब्राहीम और उनकी कौम के लोगो मे जो बात हुई थी, कुरान मे उसका स्थान-स्थान पर उल्लेख है, उसमे इब्राहीम

अपने विश्वास की घोषणा करते हुए कहते हैं—

"अल्लज़ी फतरनी फइन्नहू सयहदीन", यानी, जिस सृष्टिकर्त्ता ने मुझे शरीर और अस्तित्व प्रदान किया, अवश्य ही उसने मेरी हिदायत का सामान भी पैदा कर दिया होगा। सूरा २६ मे यही बात अधिक विस्तार से बयान की गई है।

الذی خلقنی فھو یھدین
والذی ھو یطعمنی ویسقین
واذا مرضت فھو یشفین

जिस प्रतिपालक ने मुझे पैदा किया है वही मुझे हिदायत करेगा, और वही जो मुझे खिलाता और पिलाता है और जब बीमार हो जाता हूँ तो मुझे चंगा करता है।

—सू० २६, आ० ७६

यानी जिस प्रतिपालक की पालन-शक्ति ने मेरे जीवन की सभी आवश्यकताओं का सामान कर दिया है, जो मुझे भूख मिटाने के लिए भोजन, प्यास बुझाने के लिए पानी, और अस्वस्थ हो जाने पर स्वास्थ्य प्रदान करता है, उसके लिए यह कैसे सम्भव है कि मुझे पैदा करके उसने मेरी हिदायत का सामान न किया हो? अगर उसने मुझे पैदा किया है तो यह निश्चय है कि वही खोज और प्रयत्न मे मेरा पथ-प्रदर्शन भी करेगा। सूरा ३७ मे यही मतलब इन शब्दों मे जाहिर किया गया है—

انی ذاھب الی ربی سیھدین

मै (सब ओर से हटकर अपने परवरदिगार की ओर जाता हूँ, वही मेरी हिदायत करेगा

—सू० ३७, आ० ६७।

आयत के अन्दर "रब्बी" शब्द पर ध्यान दीजिए। वह मेरा "रब्ब" यानी पालक है। और जब वह रब्ब है तो जरूरी है कि वही मेरे लिए कर्म का मार्ग भी खोल दे।

हिदायत के पहले तीन दरजे

हिदायत के भी कई दरजे है जिन्हे हम प्राणियों मे अनुभव करते है। सबसे पहला दरजा अन्त.प्रवृत्ति (वुजदान) का है। अन्त:प्रवृत्ति से तात्पर्य जीवो के अन्दर की स्वाभाविक और आन्तरिक प्रेरणा है। हम देखते है कि बच्चा पैदा होते ही अपने आहार के लिए रोने लगता है और बिना किसी बाहरी प्रेरणा के माँ का स्तन मुँह मे लेकर पीने लगता है और अपना आहार ग्रहण करने लगता है।

अन्त प्रवृत्ति (वुजदान) के बाद इन्द्रिय-ज्ञान (हवास) की हिदायत का दरजा है, और वह इससे ऊँचा है। इससे हमको देखने, सुनने, चखने, छूने और सूँघने की शक्ति प्राप्त होती है, और इन्ही के जरिये बाहर की चीजों का ज्ञान प्राप्त करते है।

स्वाभाविक हिदायत के यह दोनों दरजे मनुष्य और पशु सबके लिए है। परन्तु हम देखते है कि मनुष्य के लिए हिदायत का एक तीसरा दरजा भी मौजूद है, और वह अक्ल यानी बुद्धि की हिदायत है। इस तीसरी हिदायत ने ही मनुष्य के लिए अपरिमित उन्नति का द्वार खोल दिया है जिसके कारण उसने पृथ्वी के जीवों में सबसे अधिक उन्नत प्राणी का पद प्राप्त कर लिया है।

अन्त प्रवृत्ति (वुजदान) मनुष्य मे खोज और प्रयत्न का उत्साह पैदा करती है। इन्द्रियाँ (हवास) उसके लिए ज्ञान का सचार करती है, और बुद्धि परिणाम और व्यवस्था निश्चित करती है।

पशुओं को इस आखिरी दरजे की आवश्यकता न थी; इसलिए

वे पहले दोनों दरजे, अर्थात् अन्त.प्रवृत्ति और इन्द्रिय-ज्ञान, तक ही रह गये। लेकिन मनुष्य को यह तीनों दरजे प्राप्त हुए।

बुद्धि का तत्त्व क्या है ? वास्तव मे यह उसी शक्ति की उन्नत अवस्था है जिसने पशुओ मे अन्त प्रवृत्ति और इन्द्रिय-ज्ञान का दीपक प्रज्वलित किया है। जिस तरह मानव-शरीर पार्थिव शरीरो मे सबसे अधिक उन्नत है उसी तरह उसकी आन्तरिक शक्ति भी अन्य सभी आन्तरिक शक्तियों से बढी-चढी है। जीव की वह चेतन शक्ति जो वनस्पति मे अप्रकट और पशु की अन्त प्रवृत्ति और उसके इन्द्रिय-ज्ञान में प्रकट थी, वही मनुष्य मे पहुँचकर पूर्णता को प्राप्त हुई और बुद्धि-तत्त्व कहलाने लगी।

हम देखते है कि स्वाभाविक हिदायत के इन तीनो दरजो मे से हर एक की अपनी विशेष सामर्थ्य और उसका एक विशेष कार्यक्षेत्र है, जिससे वह आगे नही बढ सकता। अगर उस दरजे से ऊँचा दूसरा दरजा मौजूद न होता तो हमारी आन्तरिक शक्तियाँ उस सीमा तक उन्नत न हो सकती जिस सीमा तक कि अब हमारी ही आन्तरिक प्रेरणा से वे उन्नति कर रही है।

अन्त.प्रवृत्ति हम म खोज और प्रयत्नशीलता उत्पन्न कर हमे जीवन की आवश्यकताओं की प्राप्ति की ओर लगाती है, लेकिन हमारे भौतिक शरीर के बाहर जो कुछ मौजूद है उसका ज्ञान हमे नही कराती। यह काम इन्द्रियों का है। कान सुनता है, आँख देखती है, नाक सूँघती है, जिह्वा स्वाद लेती है, और हाथ स्पर्श करता है, और इस तरह हम अपने शरीर से बाहर के समस्त इन्द्रिय-ग्राह्य पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। परन्तु यह इन्द्रिय-ज्ञान एक खास हद तक ही काम दे सकता है, उससे आगे नही बढ़ सकता। आँख देखती

है, मगर सिर्फ उसी हालत मे जब कि देखने की सब शर्तें मौजूद हो। अगर किसी एक भी शर्त का अभाव हो—जैसे, प्रकाश न हो, या फ़ासला अधिक हो—तो हम आँख रहते हुए भी किसी पदार्थ को साक्षात् नही देख सकते। इसके अतिरिक्त इन्द्रियाँ चीज़ों का सिर्फ आभास करा सकती है, पर केवल इसी से काम नही चलता। हमे आवश्यकता होती है नतीजे निकालने की, उन्हे परखने की, उनसे अहकामात, यानी व्यवस्था, स्थिर करने की, और सार्वभौमिक नियम प्रतिपादन करने की। यह सब काम बुद्धि का है। बुद्धि इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त हुए ज्ञान को तरतीब देती है और उनसे सार्वभौमिक नतीजे और व्यवस्थाएँ स्थिर करती है।

जिस तरह अन्त:प्रवृत्ति के काम के पूरा करने के लिए इन्द्रियों और इन्द्रिय-ग्राह्य पदार्थों की आवश्यकता है उसी तरह इन्द्रियों के काम की दुरुस्ती और निगरानी के लिए बुद्धि की ज़रूरत है। इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान केवल अपूर्ण ही नही वरन् प्राय: भ्रामक और मिथ्या भी होता है। एक बड़ा भारी गुम्बद अथवा कोई विशाल पदार्थ दूर से देखने पर हमे छोटे से काले बिन्दु से अधिक नहीं दिखाई देता। हम बीमारी की हालत में शहद खाते है और वह हमारी जबान के बिगड़ जाने से हमको कड़वा मालूम पड़ता है। पानी मे सीधी लकड़ी की परछाईं हमे टेढ़ी देख पड़ती है। प्राय. बीमारी के कारण कान बजने लगते हैं और ऐसी आवाज़े सुनाई देती है जिनका बाहर कोई अस्तित्व नही होता। अगर इन्द्रियों के ऊपर एक और शक्ति अर्थात् बुद्धि न होती तो इन्द्रियों की अपूर्णता के कारण सच्चाई को जान सकना हमारे लिए असम्भव होता। परन्तु ऐसी अवस्थाओं मे बुद्धि आ मौजूद होती है और इन्द्रियों की असमर्थता में हमारा पथ-प्रदर्शन

करती है। इस बुद्धि के द्वारा ही हम जान लेते है कि सूर्य एक महान् और विशाल पिण्ड है, चाहे हमारी आँख उसे एक सुनहरी थाली के बराबर ही क्यो न देखे । इस बुद्धि से हम जान लेते है कि शहद वास्तव मे मीठा है, चाहे हमारी स्वादेन्द्रिय के बिगड़ जाने से वह हमे कडवा ही क्यो न मालूम पड़े। इसी तरह बुद्धि बतलाती है कि कभी-कभी खुश्की बढ जाने के कारण कान बजने लगते है और इस हालत मे जो आवाज सुनाई देती है वह बाहर की नही बल्कि हमारे ही दिमाग की गूँज है।

हिदायत का चौथा दरजा

जिस तरह अन्त:प्रवृत्ति के बाद हमे इन्द्रियो की ओर से हिदायत मिलती है—क्योंकि अन्त:प्रवृत्ति एक खास हद से आगे नही बढ सकती—और जिस तरह इन्द्रियो के बाद बुद्धि प्रकट हुई, क्योंकि इन्द्रियाँ भी एक खास हद से आगे नही बढ़ सकती थी, ठीक उसी तरह हम अनुभव करते है कि बुद्धि के बाद भी उससे आगे की हिदायत के लिए कोई उच्चतर शक्ति होनी चाहिए, क्योंकि बुद्धि भी एक खास हद से आगे नही बढ़ सकती और बुद्धि के कार्य-क्षेत्र के बाद भी एक विशाल क्षेत्र बाकी रह जाता है। बुद्धि का कार्य-क्षेत्र जैसा और जितना है वह सब इन्द्रिय-ज्ञान की परिधि में सीमित है, यानी बुद्धि सिर्फ उसी हद तक काम दे सकती है जिस हद तक हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ जानकारी करा सकें। परन्तु हमारे इन्द्रिय-ज्ञान की सीमा के आगे क्या है ? उस परदे के पीछे क्या है जिसके आगे हमारी इन्द्रियों की पहुँच नही है ? यहाँ पहुँचकर बुद्धि असमर्थ और बेकार हो जाती है, बुद्धि की हिदायत आगे

हमे कोई प्रकाश नही पहुँचा सकती।

जहाँ तक मनुष्य के क्रियात्मक जीवन का सम्बन्ध है बुद्धि उस के पथ-प्रदर्शन के लिए न तो हर हाल मे काफी है और न हर हाल मे प्रभावोत्पादक ही। मनुष्य का मन तरह-तरह की वासनाओ और तरह-तरह के भावो में इस तरह उलझा हुआ है कि जब कभी बुद्धि और वासनाओ के बीच संघर्ष होता है तो विजय प्राय. वासनाओं ही की होती है। बुद्धि हमें अनेक बार विश्वास दिलाती है कि अमुक कार्य हानिकर और घातक है, लेकिन वासनाएँ हमे प्रेरित करती है और हम उस काम से अपने को रोक नही सकते। बुद्धि को बड़ी से बडी दलील भी ऐसा नही कर सकती कि हम क्रोध की हालत मे बेकाबू न हो जायँ और भूख की हालत मे हानिकर भोजन की ओर हाथ न बढ़ाएँ।

परमेश्वर की पालकता के लिए यदि यह आवश्यक था कि वह हमे अन्त.प्रवृत्ति के साथ-साथ ज्ञानेन्द्रियाँ भी दे, क्योकि हमारे पथ-प्रदर्शन में अन्त:प्रवृत्ति एक खास हद से आगे नही बढ़ सकती, तो क्या यह आवश्यक न था कि बुद्धि के साथ वह हमे कुछ और भी दे, क्योंकि बुद्धि भी एक ख़ास हद से आगे नही बढ सकती और मानव-बुद्धि हमारे कर्मो की दुरुस्ती और उनके नियंत्रण के लिए पर्याप्त नही है ?

क़ुरान कहता है कि यह आवश्यक था और इसी कारण उस दयालु परमात्मा ने मनुष्य के लिए हिदायत के चौथे दरजे का भी सामान कर दिया। इसी को क़ुरान 'वही' और 'नबुव्वत' का नाम देता है। इसीलिए हम देखते है कि क़ुरान में जहाँ-तहाँ इन चारों दरजों की हिदायत का ज़िक्र किया गया है, और इन्हें ईश्वर

की पालकता का सर्वोत्तम प्रसाद माना गया है।

انا خلقنا الانسان من
نطفة امشاج نبتليه فجعلناه
سميعا بصيرا۔ انا هديناه
السبيل اما شاكرا و اما كفورا۔

हमने मनुष्य को रज-वीर्य के मेल से पैदा किया (जिसे एक के बाद एक हम विविध अवस्थाओं में पलटते हैं), फिर हमने उसे सुननेवाला और देखने-वाला बना दिया। हमने उसके सामने कर्म करने का क्षेत्र खोल दिया है। अब यह उसका काम है कि चाहे वह कृतज्ञ हो चाहे कृतघ्न (अर्थात् या तो वह ईश्वरप्रदत्त शक्तियों का सदुपयोग कर कल्याण और नेकी के मार्ग पर चले या इनसे कार्य न लेकर पथ-भ्रष्ट हो जाय)।

—सू० ७६, आ० २

الم نجعل له عينين ولسانا
وشفتين وهديناه النجدين

क्या हमने उसे एक छोड़ दो-दो आँखे नही दी है (जिनसे वह देखता है), और क्या जीभ और होंठ नही दिये है (जो बोलने के साधन है)।

—सू० ९०, आ० ६

وجعل لكم السمع والابصار
والافئدة لعلكم تشكرون۔

ईश्वर ने तुम्हें सुनने और देखने के लिए इन्द्रियाँ दीं, और

सोचने के लिए दिल दिये (यानी बुद्धि दी),[१] जिसमे तुम कृतज्ञ हो (यानी ईश्वर की दी हुई शक्तियों का सदुपयोग करो)।

—सू० १६, आ० ८०

इन आयतों में और इसी तरह की अन्य आयतों मे जगह-जगह कई तरह की हिदायत की ओर इशारे किये गये है, जैसे इन्द्रियों और इन्द्रिय-ग्राह्य पदार्थों द्वारा हिदायत तथा बुद्धि और मनन द्वारा हिदायत। किन्तु जहाँ कही मनुष्य के आत्मिक कल्याण वा अकल्याण का वर्णन किया गया है वहाँ 'वही' और 'नबुव्वत' द्वारा हिदायत से ही सम्बन्ध है। जैसे—

ان علينا للهدى وان لنا
للاخرة والاولى -

निस्सन्देह हमारा काम है कि हम हिदायत (पथ-प्रदर्शन) करें और निश्चय यह दोनों लोक (यह लोक और परलोक) हमारे ही हैं (इसलिए जो सीधी राह चलेगा उसके दोनों लोक सुधरेंगे और जो भटकेगा उसके दोनों लोक बिगड़ेगे)।

—सू० ९२, आ० १३

---

१. अरबी में 'क़ल्ब' और 'फ़ुआद' के अर्थ केवल उस अङ्ग ही के नहीं हैं जिसे हम दिल कहते हैं, बल्कि इसका उपयोग 'अक़्ल' और 'फ़िक्र' के लिए भी होता है। क़ुरान में जहाँ कहीं कान, आँख इत्यादि के साथ 'क़ल्ब' और 'फ़ुआद' कहा गया है उससे मतलब जौहरे अक़्ल (बुद्धितत्त्व) है।

واما ثمود فهديناهم
فاستحبوا العمى على الهدى

बाकी रही समूद कौम, उसे भी हमने (सच्ची) राह दिखा दी थी, परन्तु उसने अन्धापन अख्तियार किया और वह हमारी हिदायत (प्रदर्शित पथ) पर नहीं चली। --सू० ४१, आ० १६

والذين جاهدوا فينا
لنهدينهم سبلنا وان الله
لمع المحسنين.

और जिन लोगों ने हमारी राह मे प्रयत्न और परिश्रम किया उनके लिए आवश्यक है कि हम भी अपनी राहे खोल दें। निस्सन्देह परमात्मा उन लोगों का साथी और सहायक है जो सदाचारी हैं। --सू० २९, आ० ६९

२. एक-धर्म

अल्-हुदा

इस सिलसिले में कुरान परमात्मा की एक विशेष हिदायत का वर्णन करता है और उसे 'अल्-हुदा' के नाम से पुकारता है। ('अल्' एक निर्देशात्मक शब्द है जिसका अर्थ 'वह' या 'विशेष' है और 'हुदा' का अर्थ 'हिदायत' है।)

قل ان هدى الله هو
الهدى وامرنا لنسلم
لرب العالمين

(ऐ पैगम्बर! उनसे) कह दो कि निस्सन्देह परमात्मा की हिदायत ही 'अल्-हुदा' है (यानी मनुष्य के लिए वही वास्तविक हिदायत है), और हम सब को (इस बात का) हुक्म दिया गया है कि समस्त सृष्टि के पालनकर्त्ता के सम्मुख सिर झुका दें।

——सू० ६, आ० ७०

ولن ترضى عنك اليهود
ولا النصارى حتى تتبع
ملتهم. قل ان هدى الله
هو الهدى.

और (याद रखो, यहूदी तुमसे खुश न होंगे जब तक तुम उनके सम्प्रदाय की पैरवी न करो। यही हाल ईसाइयों का भी है। (ऐ पैग़म्बर! तुम उनसे कह दो) 'अल्-हुदा' (यानी सच्ची

हिदायत तो वही है जो परमात्मा
की हिदायत है (इसलिए तुम्हारी
साम्प्रदायिक दलबन्दियों की मै
कैसे पैरवी कर सकता हूँ ? मेरी
राह तुम्हारी गढ़ी हुई सम्प्रदायों
की राह नही है, बल्कि ईश्वर की
विश्वव्यापी हिदायत की राह है)।
—सू० २, आ० १२०

यह 'अल्-हुदा' क्या है ? कुरान कहता है कि यह ईश्वर की वह विश्वव्यापी हिदायत है जो सृष्टि के आरम्भ से दुनिया मे मौजूद है और बिना भेदभाव मनुष्यमात्र के लिए है। क़ुरान कहता है कि जिस तरह परमात्मा ने अन्त:प्रवृत्ति, इन्द्रियाँ और बुद्धि प्रदान करने मे वश और जाति, देश और काल का भेद नही रखा उसी तरह यह ईश्वरीय हिदायत भी हर प्रकार के भेदभाव और पक्षपात से ऊपर है। वह सबके लिए है और सबको दी गई है, इस एक हिदायत के सिवा और जितनी हिदायते मनुष्यों ने समझ रखी हैं सब मनुष्य की गढ़ी हुई है। ईश्वर का बताया हुआ मार्ग तो सिर्फ एक ही है। इसीलिए क़ुरान हिदायत के उन समस्त रूपों से सर्वथा इनकार करता है जिन्होंने मानव-समाज को इस असल से हटाकर भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों और टोलियों मे बॉट दिया है और कल्याण तथा मुक्ति की विश्वव्यापी सच्चाई को विशेष सम्प्रदायों और टोलियों की पैतृक सम्पत्ति बना लिया है। क़ुरान कहता है कि मनुष्य की बनाई हुई यह अलग-अलग राहें हिदायत की राह नही हो सकती। हिदायत की राह तो वही विश्वव्यापी हिदायत की

राह है। और उसी विश्वव्यापी ईश्वरनिर्दिष्ट मार्ग को क़ुरान 'अल्-दीन' के नाम से पुकारता है जिसका अर्थ है मनुष्य-मात्र के लिए सच्चा दीन। इसी का नाम क़ुरान के शब्दों मे 'इसलाम' है।

धार्मिक ऐक्य का तत्त्व

यह महान् तत्त्व क़ुरान के सन्देश की सबसे पहली बुनियाद है। क़ुरान जो कुछ तत्त्व बतलाना और सिखाना चाहता है सब इसी पर अवलम्बित है। अगर इस तत्त्व से नज़र फेर ली जाय तो क़ुरान के सन्देश का सारा ढाँचा छिन्न-भिन्न हो जाता है। परन्तु ससार के इतिहास की आश्चर्यजनक प्रगति मे यह भी एक विचित्र घटना है कि क़ुरान ने इस तत्त्व पर जितना अधिक ज़ोर दिया था उतना ही संसार की दृष्टि इससे फिरी रही। यहाँ तक कि आज कुरान की कोई बात भी संसार की दृष्टि से इस दरजे छिपी हुई नही है जितना कि यह महान् तत्त्व। यदि कोई व्यक्ति हर प्रकार के बाहरी प्रभाव से अलग होकर क़ुरान को पढ़े और उसके पृष्ठों मे स्थान-स्थान पर इस महान् तत्त्व के अकाट्य और स्पष्ट ऐलान देखे और फिर उस ससार की ओर दृष्टि डाले जिसने यह समझ रखा है कि कुरान भी अन्य धार्मिक सम्प्रदायों की तरह एक सम्प्रदाय-मात्र है तो अवश्य ही वह हैरान होकर पुकार उठेगा कि या तो मेरी निगाहें मुझे धोखा दे रही हैं और या ससार सदा बिना आँखे खोले ही अपने फ़ैसले दे दिया करता है।

इस सच्चाई को स्पष्ट करने के लिए आवश्यक है कि एक बार विस्तार के साथ यह बात साफ़ कर दी जाय कि जहाँ तक 'वही' और 'नबुव्वत' यानी दीन (धर्म) का सम्बन्ध है कुरान का आदेश

क्या है और वह मनुष्य को किस मार्ग की ओर ले जाना चाहता है। सम्भव है यह विस्तार उस हद से बढ़ जावे जो हम 'तर्जुमानुल्कुरान' की व्याख्या के लिए नियत कर चुके हैं। किन्तु इस प्रश्न के असाधारण महत्त्व को देखते हुए हमें इस तरह की कड़ाई नही करनी चाहिए जिससे क़ुरान के वास्तविक उद्देश्य की बुनियादी चीजे अस्पष्ट रह जायँ। इस बारे मे कुरान ने जो कुछ कहा है उसका साराश इस प्रकार है—

कुरान कहता है कि शुरू-शुरू मे मनुष्य स्वाभाविक जीवन व्यतीत करते थे, उनमें न कोई परस्पर मतभेद था और न कोई झगड़े। सबकी ज़िन्दगी एक ही तरह की थी और सब अपनी स्वाभाविक सादगी से सन्तुष्ट थे। फिर इनकी संख्या और आवश्यकताओं के बढ़ने पर इनमे तरह-तरह के मतभेद पैदा हो गये। इन मतभेदों के कारण लोग एक दूसरे से बटकर टुकड़े-टुकड़े हो गये और अन्याय तथा झगड़ों की उत्पत्ति हुई। हर दल दूसरे दल से घृणा करने लगा और बलवान दुर्बलों के अधिकार हड़पने लने। जब ऐसी अवस्था उत्पन्न हो गई तो यह आवश्यक हो गया कि मनुष्य-जाति की हिदायत के लिए और न्याय तथा सत्य की स्थापना के लिए 'वही इलाही', यानी ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश प्रकट हो। इसीलिए यह प्रकाश प्रकट हुआ और ईश्वर की ओर से पैगम्बरों को आने और उनके उपदेशों का सिलसिला क़ायम हो गया। क़ुरान उन तमाम पथ-प्रदर्शकों को जिनके द्वारा इस हिदायत का सिलसिला कायम हुआ 'रसूल' के नाम से पुकारता है, क्योंकि वे ईश्वरीय सत्ता का सन्देश (पैग़ाम) पहुँचाने वाले थे, और रसूल का अर्थ पैगाम पहुँचानेवाला है।

وما كان الناس الا أمة
واحدة فاختلفوا - ولو كان كلمة
سبقت من ربك لقضى بينهم
فيما فيه يختلفون

आरम्भ मे मानव-जाति का एक ही गिरोह था (लोग भिन्न-भिन्न दलों मे बॅटे हुए नही थे), फिर वे एक दूसरे से अलग-अलग हो गये। यदि तुम्हारे पालन-कर्त्ता ने पहले से यह फ़ैसला न कर दिया होता (कि भविष्य में मानव-समाज में मतभेद होगा और लोग पृथक्-पृथक् मार्ग ग्रहण करेंगे) तो जिन बातों में लोग मतभेद रखते है उनका निपटारा भी इसी दुनिया मे कर दिया गया होता।

—सू० १०, आ० ३०

كان الناس امة واحدة
فبعث النبيين مبشرين و
منذرين - وانزل معهم الكتاب -
بالحق ليحكم بين الناس
فيما اختلفوا فيه

आरम्भ मे सभी मनुष्य एक ही गिरोह थे (फिर उनमे मतभेद हुआ और वे एक दूसरे से पृथक् हो गये), इसलिए परमात्मा ने (एक के बाद दूसरे) पैगम्बरों को उत्पन्न किया, वे (सुकर्मों के परिणाम की) खुश खबरी देते थे और (कुकर्मों के भयानक नतीजों से) लोगो को डराते थे।

उनके साथ 'अल-किताब' (यानी ईश्वरीय आदेश से लिखी जाने वाली किताब) प्रकट हुई, ताकि जिन बातों में लोगों मे मतभेद हो गया था उनमे वह किताब फैसला कर दे। —सू० २, आ० २१३

यह हिदायत किसी ख़ास देश, जाति, या काल के लिए ही नही बल्कि समस्त मानव-समाज के लिए थी। इसीलिए प्रत्येक युग और प्रत्येक देश में उसका एक-सा आविर्भाव हुआ। क़ुरान कहता है कि दुनिया का ऐसा कोई कोना नही जहाँ मानव-जाति बसी हो और जहाँ कोई न कोई पैग़म्बर ईश्वर की ओर से न हुआ हो।

وان من امة الا خلا فيها نذير

ससार की कोई कौम ऐसी नही है जिसमे (कुकर्मो के परिणाम से) डरानेवाला (ईश्वर का कोई पैग़म्बर) न पैदा हुआ हो। —सू० ३५, आ० २५

انما انت منذر ولكل قوم هاد

(ऐ पैग़म्बर !) वास्तव मे तुम इसके सिवा और कुछ नही—केवल (कुकर्मो के परिणामो से लोगों को) डरानेवाले (रसूल) हो। और दुनिया मे हर क़ौम के लिए हिदायत करनेवाला हुआ है। —सू० १३, आ० ९

ولكل امة رسول۔ فاذا جاء رسولهم قضى بينهم بالقسط و هم لا يظلمون

हर कौम के लिए एक रसूल है। इसलिए जब रसूल (अपनी सत्य की शिक्षा के साथ) प्रकट होता है तो उस कौम के सारे लड़ाई-झगड़ो, (अन्याय और उत्पातों) का इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जाता है।

—सू० १०, आ० ४८

क़ुरान कहता है कि मनुष्य-जाति के प्रारम्भिक काल मे एक के बाद दूसरे कितने ही पैगम्बरो ने प्रकट होकर भिन्न-भिन्न कौमों को सत्य का सन्देश सुनाया है।

وكم ارسلنا من نبي في الاولين

और कितने ही नबी हैं जिन्हें हमने पहले के लोगों (यानी प्रारम्भिक काल की क़ौमों) मे भेजा। —सू० ४३, आ० ५

कुरान कहता है कि यह बात ईश्वरीय न्याय के विरुद्ध है कि जब तक किसी कौम की हिदायत के लिए उनमे कोई रसूल न भेजा गया हो तब तक वह क़ौम अपने कुकर्मो के लिए उत्तरदायी ठहराई जाय।

وما كنا معذبين حتى نبعث رسولا

और (हमारा कानून यह है कि) जब तक हम पैगम्बर भेजकर कर्तव्य का ज्ञान नही कराते तब तक कुकर्मो की सजा नहीं देते।

—सू० १७, आ० १६

وما كان ربك مهلك القرى حتى يبعث فى امها رسولا يتلوا عليهم آياتنا وما كنا مهلكى القرى الا و اهلها ظالمون

और (स्मरण रखो) तुम्हारे परमात्मा का नियम है कि वह कभी मनुष्यों की बस्तियो को (कुकर्मो के कारण) नष्ट नही करता जब तक कि उनमें एक पैगम्बर न भेजदे और वह पैगम्बर ईश्वर का आदेश उन्हे पढ़कर न सुना दे। और हम कभी बस्तियों को नष्ट करनेवाले नही है, मगर सिर्फ उसी हालत में जब कि उनके रहनेवालों ने जुल्म करना ही अपना पेशा बना लिया हो (यानी हमारे नियम के अनु-सार सिर्फ वही आबादी नष्ट होती है जो अन्याय और झगड़ों मे डूब जाती है और ईश्वर के आदेश की अवहेलना करती है)।

—सू० २८, आ० ५९

परमात्मा के इन रसूलों और ईश्वरीय धर्म के प्रचारकों में से कुछ का वर्णन क़ुरान मे किया गया है और कुछ का नही।

ولقد ارسلنا رسلا من قبلك منهم من قصصنا عليك و منهم من لم نقصص عليك

और (ऐ पैगम्बर!) हमने तुमसे पहले कितने ही पैगम्बर भेजे। उनमे से कुछ ऐसे है जिनका वर्णन तुम से किया है, और कुछ

ऐसे है जिनका वर्णन नही किया
(यानी कुरान मे उनका ज़िक्र
नही किया गया है) ।

—सू० ४०, आ० ७८

नूह, आद, और समूद कौमो के बाद कितनी ही कौमे हो गई है और उनमें कितने ही रसूल भेजे जा चुके है जिनका ठीक-ठीक हाल परमेश्वर को ही मालूम है ।

الم يأتكم نبؤا الذين من
قبلكم قبلكم قوم نوح وعاد
وثمود والذين من بعدهم
لا يعلمهم الا الله جاءتهم
رسلهم بالبينات فردوا ايديهم
فى افواههم

तुम से पहले जो कौमें संसार मे हो चुकी है, क्या तुम तक उनकी खबर नही पहुँची ? नूह, आद, समूद, और वे क़ौमें जो उनके बाद हुई जिनकी ठीक-ठीक संख्या परमेश्वर ही को मालूम है, उन सब कौमों मे उनके लिए पैग़म्बर सत्य के प्रकाश के साथ भेजे गये । परन्तु उन क़ौमों ने मूर्खता और उद्दण्डता से उनके उपदेशो पर ध्यान नही दिया ।

—सू० १४, आ० ६

ससार के हर कोने में प्रकृति के नियम ईश्वर की ओर से एक से ही है । वे न तो कई तरह के हो सकते है और न परस्पर विरोधी हैं । इसलिए आवश्यक था कि यह हिदायत भी आरम्भ से एक-सी होती और एक ही तरह पर सब मनुष्यों को मुखातिब करती । इस-लिए कुरान कहता है कि ईश्वर के जितने पैगम्बर हुए है, चाहे वे

किसी भी युग और देश में क्यों न हुए हों, सब का मार्ग एक ही था और सब ने मानव-कल्याण के लिए ईश्वर के एक ही विश्व-व्यापी नियम का उपदेश दिया। कल्याण का यह विश्वव्यापी नियम क्या है ? यह नियम ईमान (विश्वास) और सत्कर्मों का नियम है यानी एक ईश्वर की उपासना और नेकी का जीवन व्यतीत करना। इसके अतिरिक्त और इसके प्रतिकूल जो बातें धर्म के नाम पर कही जाती हैं वह सच्चा धर्म नहीं है।

ولقد بعثنا فی کل امۃ رسولا
ان اعبدوا اللہ واجتنبوا
الطاغوت

निस्सन्देह हमने दुनिया की हर क़ौम मे एक पैगम्बर भेजा (जिसका उपदेश यह था) कि ईश्वर की उपासना करो और दुष्ट वासनाओ (यानी पाशविक वृत्तियों) के भुलावे में न आओ।
—सू० १६, आ० ३८

وما ارسلنا من قبلک من
رسول الا نوحی الیہ انہ لا الٰہ
الا انا فاعبدون

और (ऐ पैगम्बर!) हमने तुम से पहले कोई भी रसूल दुनिया मे ऐसा नही भेजा जिसको हमने यह आदेश (वही) न दिया हो कि "मै ही एकमात्र उपास्य देव हूँ, इसलिए मेरी ही इबादत करो"। —सू० २१, आ० २४

क़ुरान कहता है कि दुनिया मे कोई भी धर्म-प्रवर्तक ऐसा नही हुआ जिसने इसी धर्म पर दृढ़ रहने और भेदभावों से बचने की शिक्षा न दी हो। सब की शिक्षा यही थी कि ईश्वर का धर्म बिछड़े

हुए मनुष्यों को जमा कर देने के लिए है। उन्हें अलग-अलग कर देने के लिए नही। इसलिए एक ही परमात्मा की उपासना मे सब एकत्र हो जायँ और भेदभाव और झगड़े के स्थान पर पारस्परिक प्रेम और एकता का मार्ग ग्रहण करे।

وان هذه امتكم امة واحدة
وانا ربكم فاتقون

और (देखो) यह तुम लोगों का सम्प्रदाय वास्तव में एक ही सम्प्रदाय है, और मै तुम सब का परवरदिगार हूँ। इसलिए (मेरी उपासना और भक्ति की राह में तुम सब एक हो जाओ और) अवज्ञा से बचो।

—सू० २३, आ० ५४

क़ुरान कहता है कि परमात्मा ने तुम सब को एक समान मनुष्य का चोला दिया था, परन्तु तुमने तरह-तरह के वेष और नाम ग्रहण कर लिये, जिससे मानव-जाति की एकता का सूत्र टुकड़े-टुकड़े हो गया। तुम्हारे वंश अनेक है इसलिए तुम वंश के नाम पर एक-दूसरे से अलग हो गये। तुम्हारे अलग-अलग बहुत से देश हो गये, इसलिए भिन्न-भिन्न जन्मभूमियों के नाम पर तुम एक-दूसरे से लड़ रहे हो। तुम्हारी जातियाँ अगणित हैं, इसलिए हर जाति दूसरी जाति से हाथापाई कर रही है। तुम्हारे रंग एक-से नही हैं, यह भी पारस्परिक घृणा और द्वेष का एक बड़ा कारण बन गया है। तुम्हारी भाषाएँ भिन्न-भिन्न हैं, यह बात भी तुम्हें एक-दूसरे से पृथक् करने वाली है। इनके अलावा, अमीर ग़रीब, स्वामी-सेवक, कुलीन-अकुलीन, बलवान-निर्बल, ऊँच-नीच, इत्यादि, अगणित भेद

उत्पन्न कर लिये गये हैं। इन सब का उद्देश्य यही है कि तुम एक दूसरे से पृथक् हो जाओ और एक दूसरे से घृणा करते रहो। ऐसी हालत में बतलाओ वह कौन-सा सूत्र है जो इतने भेदो के होते हुए भी मनुष्य को एक-दूसरे से जोड़ दे, और बिछड़ा हुआ मानव-परिवार फिर नये सिरे से बस जाय? कुरान कहता है कि सिर्फ एक ही सूत्र बाक़ी रह गया है, और वह ईश्वरोपासना का पवित्र सूत्र है। तुम कितने ही अलग-अलग क्यों न हो, परन्तु तुम्हारे लिए अलग-अलग परमात्मा नही हो सकते। तुम सब एक ही परवर-दिगार के बन्दे हो, और तुम सब की बन्दना और भक्ति के लिए एक ही उपास्य देव की चौखट है। तुम अगणित भेदभाव रखकर भी एक ही उपासना की डोरी मे बँधे हुए हो। तुम्हारा कोई भी वश क्यों न हो, तुम्हारी कोई भी जाति क्यों न हो, तुम किसी भी दल अथवा श्रेणी के मनुष्य क्यो न हो, परन्तु जब तुम एक ही परमपिता की शरण मे जाओगे तो यह ईश्वरीय सम्बन्ध तुम्हारे समस्त पार्थिव झगड़ो को मिटा देगा और तुम सबके बिछुड़े हुए हृदय परस्पर मिल जायँगे। तब तुम अनुभव करोगे कि सारा संसार तुम्हारा देश है, सारा मानव-समाज तुम्हारा परिवार है और तुम सब एक ही परमपिता की सन्तान हो।

इसलिए कुरान का उपदेश है कि ईश्वर के जितने रसूल आये सबकी शिक्षा यही थी कि 'अल्दीन' (अद्दीन) पर, अर्थात् समस्त मानव-जाति के एक विश्वव्यापी धर्म पर तुम सब दृढ रहो और इस मार्ग मे एक दूसरे से अलग न हो जाओ।

شرع لكم من الدين ما
وصى به نوحا والذى اوحينا
اليك وما وصينا به ابراهيم
وموسى وعيسى ان اقيموا
الدين ولا تتفرقوا فيه

और (देखो) उसने तुम्हारे लिए धर्म का वही मार्ग स्थिर कर दिया है जिसकी हिदायत नूह को की गई थी और जिस पर चलने की आज्ञा इब्राहीम, मूसा, और ईसा को दी गई थी। (इन सब की परस्पर शिक्षा यही थी कि) 'अद्दीन' यानी परमात्मा का धर्म क़ायम रखो और इस राह मे अलग-अलग न हो।

—सू० ४२, आ० ११

इसी आधार पर क़ुरान बतौर एक दलील के इस बात पर ज़ोर देता है कि यदि तुम्हे मेरी शिक्षा की सच्चाई से इनकार है तो तुम किसी भी धर्म के ईश्वरीय ग्रन्थ से सिद्ध कर दिखाओ कि सच्चे धर्म का मार्ग इसके सिवा कोई और भी हो सकता है। चाहे जिस धर्म की मूल शिक्षा को देखो, सबका मूलाधार तुम्हें यही मिलेगा।

قل هاتوا برهانكم هذا ذكر
من معى وذكر من قبلى بل
اكثرهم لا يعلمون الحق فهم
معرضون. وما ارسلنا من
قبلك من رسول الا نوحى اليه
انه لا اله الا انا فاعبدون

(ऐ पैगम्बर! इनसे) कह दो अगर तुम्हे मेरी शिक्षा से इनकार है तो तुम दलील पेश करो। यह ईश्वरीय वाणी मौजूद है, जिस पर मेरे साथियों को विश्वास है, और इसी तरह की अन्य ईश्वरीय वाणियाँ भी मौजूद है जो मुझसे पहले के पैगम्बरो

पर प्रगट हो चुकी हैं। (तुम सिद्ध कर दिखाओ किसी ने भी मेरी शिक्षा के विरुद्ध शिक्षा दी हो)। वास्तव में इन (सत्य से इनकार करनेवालों) में बहुधा ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें सत्य का बिल्कुल पता ही नही है, और इसलिए उस (सत्य) से मुँह मोड़े हुए हैं। (ऐ पैग़म्बर! विश्वास करो) हमने तुमसे पहले कोई पैग़म्बर ऐसा नही भेजा है जिसे इस बात के सिवा कोई दूसरी बात बतलाई गई हो कि मेरे सिवा तुम्हारा कोई उपास्य नही, इसलिए मेरी ही उपासना करो।

—सू० २१, आ० २४

इतना ही नही, बल्कि क़ुरान कहता है किसी ईश्वरीय ग्रन्थ से, किसी धर्म की शिक्षा से, किसी भो ज्ञानी वा द्रष्टा की वाणी या परम्परागत आख्यायिका से तुम सिद्ध कर दिखाओ कि मेरी शिक्षा सत्य की शिक्षा नहीं है।

ائتونی بکتاب من قبل
هذا او اثارة من علم ان
کنتم صادقین

अगर तुम अपने इनकार में सच्चे हो तो सबूत में ऐसा कोई ग्रन्थ पेश करो जो अब से पहले प्रकट हुआ हो, या (कम

से कम) ज्ञान या तत्वदर्शन का
कोई ऐसा हवाला ही दो जो
परम्परा से तुम्हें प्राप्त हुआ हो।
—सू० ४६, आ० ३

इसी आधार पर क़ुरान समस्त सासारिक धर्मो के पारस्परिक समर्थन को भी बतौर एक दलील के पेश करता है, यानी वह कहता है कि इनमें से प्रत्येक शिक्षा दूसरी शिक्षा का समर्थन करती है, उसे झुठलाती नही। और जब हर शिक्षा दूसरी शिक्षा का समर्थन करती है तो इससे मालूम हुआ कि इन सारी शिक्षाओं की जड़ में कोई एक ही सनातन और नित्य सत्य अवश्य काम कर रहा है, क्योंकि यदि भिन्न देश, भिन्न काल, भिन्न जाति, भिन्न भाषा और भिन्न नाम रूप मे कही हुई बाते, इतने भेदों के रहते हुए, तत्वरूप से सदा एक ही हों और एक ही लक्ष्य पर ज़ोर देती हों तो तुम्हें यह मान लेना पड़ेगा कि इन सब बातों की जड़ में कोई एक सनातन नित्य सत्य अवश्य है ।

نزل عليك الكتاب بالحق
مصدقا لما بين يديه وانزل
التورٰىة والانجيل من قبل
هدى للناس

(ऐ पैग़म्बर!) परमेश्वर ने यह ग्रन्थ (कुरान) जिसमे सच्चाई की शिक्षा है तुम पर प्रकट किया है। यह उन धर्म ग्रन्थों का समर्थन करता है जो इससे पहले प्रकट हो चुके है। इसी तरह लोगो के पथ-प्रदर्शन के लिए परमात्मा ने तौरात और इञ्जील प्रकट की थी।
—सू० ३, अ० १

وآتيناه الانجيل فيه هدى ونور مصدقا لما بين يديه من التوراة

हमने ईसा को इन्जील प्रदान की, उसमें मनुष्य के लिए हिदायत और प्रकाश है, और उससे पहले जो तौरात प्रकट हो चुकी थी इन्जील उसका समर्थन करती है, उसे झुठलाती नही। —सू० ५, आ० ४७

यही कारण है कि कुरान के उपदेशो का एक बडा विषय कुरान से पहले की हिदायतों और रसूलों का वर्णन है। कुरान उनकी समानता, एकवाक्यता और शिक्षा की अभिन्नता से धार्मिक सच्चाई के समस्त उपदेशो को प्रमाणित करता है।

३. धर्म और विधान

दीन और शरअ

अच्छा, यदि मनुष्य-मात्र के लिए एक ही धर्म है और सब धर्म-प्रवर्तकों ने एक ही तत्त्व और एक ही क़ानून का उपदेश दिया है तो फिर धर्मों मे इतनी भिन्नता कैसे हुई ? सब धर्मों में एक ही तरह की आज्ञाएँ, एक ही तरह के कर्म एक ही प्रकार के रीति-रिवाज क्यों नहीं हुए ? किसी धर्म मे उपासना की एक विधि अख्तियार की गई है, किसी में दूसरी। किसी के मानने वाले एक ओर मुँह करके उपासना करते है तो किसी के दूसरी ओर। किसी के यहाँ व्यवस्था और नियम आदि एक तरह के हैं, किसी के यहाँ दूसरी तरह के।

कुरान कहता है कि धर्मों की भिन्नता दो तरह की हैं। एक तो वह जिसे इन धर्मों के अनुयायियों ने धर्म की वास्तविक शिक्षा से हटकर पैदा कर लिया है। यह भिन्नता धर्मों की नही है बल्कि उन धर्मों के मानने वालों की गुमराही का नतीजा है। दूसरी भिन्नता वह है जो वास्तव में अलग-अलग धर्मों की आज्ञाओं और उनकी क्रियाओं मे पाई जाती है। जैसे, एक धर्म मे उपासना की कोई ख़ास विधि स्वीकार की गई है, दूसरे मे दूसरी विधि। यह भिन्नता मौलिक अथवा वास्तविक भिन्नता नहीं है, केवल ऊपरी अर्थात् गौण भिन्नता है। और इस तरह की भिन्नता का होना अनिवार्य भी था।

कुरान कहता है कि सब धर्मो की शिक्षा में दो तरह की बाते होती हैं। एक तो वह जो धर्मो का तत्त्व और उनका सार है, दूसरी वह जिनसे उन धर्मो का बाहरी रूप सजाया गया है। पहली मुख्य और दूसरी गौण है। पहली को क़ुरान 'धर्मतत्त्व' (दीन) और दूसरी को विधि-विधान (शरअ और नुसुक) का नाम देता है। इस दूसरी चीज़ के लिए 'मिनहाज' का शब्द भी इस्तेमाल किया गया है। 'शरअ' और 'मिनहाज' का शब्दार्थ मार्ग है, और 'नुसुव' का अर्थ उपासना की निधि है। क़ुरान कहता है कि धर्मो मे जो कुछ भी असली भिन्नता है वह धर्म-तत्त्व की नही बल्कि नियमों और विधि-विधान की भिन्नता है, यानी, मूल की नही शाखाओं की है, असलियत की नही बाहरी रूप-रग की है, आत्मा की नही शरीर की है। और इस भिन्नता का होना अनिवार्य था। धर्म का लक्ष्य मानव-समाज का कल्याण और उसका सुधार है, परन्तु प्रत्येक देश और प्रत्येक काल में मनुष्य समाज की अवस्था और परिस्थिति न तो कभी एक-सी हुई है और न हो सकती है। किसी ज़माने का रहन-सहन और उसकी मानसिक शक्तियाँ एक खास ढग की थी और किसी ज़माने की दूसरे ढग की। किसी देश की परिस्थिति के लिए एक ख़ास तरह का जीवन आवश्यक होता है और किसी देश के लिए दूसरी तरह का। इसलिए जिस धर्म का आविर्भाव जिस युग और जिस परिस्थिति मे हुआ और जैसी तबीयत के मनुष्यों में हुआ उसी तरह के नियम और विधि-विधान भी उस धर्म मे अख्तियार कर लिये गये। जिस काल और जिस देश मे जो ढग नियत किया गया वही उस देश और काल के लिए उपयुक्त था। इसलिए हर सूरत अपनी जगह ठीक और सत्य है,

और यह भेद उससे अधिक महत्त्व नही रखता जितना महत्त्व कि समस्त मानव-जातियों के अलग-अलग रहन-सहन और दूसरी स्वाभाविक विभिन्नताओं को दिया जा सकता है।

لكل امة جعلنا منسكا هم
ناسكوه فلا ينازعنك فى الامر
وادع الى ربك. انك لعلى
هدى مستقيم

(ऐ पैगम्बर!) हमने हर गिरोह के लिए उपासना की एक ख़ास विधि नियत कर दी है जिस पर वह अमल करता है। इसलिए लोगो को चाहिए कि इस विषय में झगड़ा न करे। (ऐ पैग़म्बर!) तुम लोगों को अपने परमात्मा की ओर बुलाओ (कि असली चीज़ यही है)। वास्तव में तुम हिदायत के सीधे रास्ते पर चलते हो। —सू० २२, आ० ६६

जब इस्लाम के पैग़म्बर ने यरूशलम (बैतुल-मुकद्दस) के बदले काबे की तरफ मुँह करके नमाज़ पढ़नी शुरू की, तब यह बात यहूदियों और ईसाइयों को अखरी, क्योंकि वे इन बाहरी और ऊपरी बातों पर ही धर्म का सारा दार-मदार रखते थे और इन्ही को सत्य और असत्य की कसौटी समझते थे।

लेकिन कुरान ने इस मामले को बिलकुल दूसरी ही नज़र से देखा है। कुरान कहता है कि तुम इस तरह की बातों को इतना महत्त्व क्यो देते हो? यह न तो सत्य और असत्य की कसौटी ही है, और न इनका धर्म के वास्तविक अर्थात् मौलिक रूप से कोई सम्बन्ध ही है। प्रत्येक धर्म ने अपनी परिस्थिति और सुविधा के अनुसार

उपासना की एक ख़ास विधि अख़्तियार कर ली और उसके अनुसार लोग बरतने लगे। परन्तु असली लक्ष्य सबका एक ही है और वह ईश्वरोपासना और सदाचरण है। इसलिए जो व्यक्ति सत्य का जिज्ञासु है उसे चाहिए कि वास्तविक लक्ष्य पर ध्यान रखे और इसी दृष्टि से सब बातों की परीक्षा करे, इन बाहरी बातो को सत्य और असत्य की कसौटी न समझ ले।

ولكل وجهة هو موليها فاستبقوا الخيرات. اين ما تكونوا يات بكم الله جميعا. ان الله على كل شئ قدير

और (देखो), हर गिरोह के लिए कोई न कोई दिशा है जिसकी ओर, उपासना करते समय, वह अपना मुँह कर लेता है (इसलिए इस मामले को इतना तूल न देकर) नेकी की राह मे एक दूसरे से आगे बढ़ जाने का प्रयत्न करो (क्योंकि असली काम यही है)। चाहे तुम किसी जगह भी हो ईश्वर तुम्हें ढूँढ़ लेगा। अवश्य ही परमात्मा की शक्ति से कोई चीज़ बाहर नही है। —सू० २, आ० १४८

फिर इसी सूरे में आगे चलकर क़ुरान ने साफ़ शब्दों में ख़ुलासा कर दिया कि असली धर्म क्या है, और किन बातों से मनुष्य धार्मिक कल्याण और समृद्धि प्राप्त कर सकता है? क़ुरान कहता है धर्म सिर्फ इस तरह की बातों में नहीं है कि उपासना करते समय किसी व्यक्ति ने मुँह पूरब की तरफ़ किया या पश्चिम की तरफ़।

वास्तविक धर्म तो ईश्वर-भक्ति और सदाचरण है । फिर विस्तार के साथ बतलाया है कि ईश्वर-भक्ति और सदाचरण की असली बाते क्या-क्या है ?

ليس البر ان تولوا وجوهكم
قبل المشرق والمغرب ولكن
البر من امن بالله واليوم
الاخر والملئكة والكتاب
والنبيين . واتى المال على
حبه ذوى القربى واليتامى
والمساكين وابن السبيل
والسائلين وفى الرقاب
واقام الصلوة واتى الزكوة
والموفون بعهدهم اذا عاهدوا
والصابرين فى الباساء والضراء
وحين الباس . اولئك الذين
صدقوا . واولئك هم المتقون

और (देखो) नेकी यह नही है कि तुमने (उपासना के समय) अपना मुँह पूर्व की ओर कर लिया या पश्चिम की ओर, (या इसी तरह की कोई दूसरी बात ज़ाहिरी रस्म व रिवाज की कर ली) । नेकी की राह तो उसकी राह है जो परमात्मा पर, आख़िरत (ईश्वर के सम्मुख उपस्थित होने) के दिन पर फ़रिश्तों पर, समस्त ईश्वरीय-ग्रन्थ और सब पैग़म्बरों पर ईमान (विश्वास) लाता है, अपना प्यारा धन सम्बन्धियों, अनाथों, दरिद्रों, यात्रियों और माँगने वालों की राह में और गुलामो को आज़ाद कराने मे ख़र्च करता है, नमाज़ पढ़ता है, जकात (अपनी कमाई मे से धर्मार्थ) देता है, बात का पक्का है, भय और घबराहट तथा तगी और मुसीबत के समय

धीर और अविचलित रहता है। (स्मरण रखो) ऐसे ही लोग है जो (अपनी दीनदारी में) सच्चे है । और ये ही हे जो बुराइयों से बचनेवाले इन्सान हैं।—सू० २, आ० १७२

जिस ग्रन्थ में १३०० वर्ष से आयत मौजूद है, अगर ससार उसके उपदेश का वास्तविक लक्ष्य नही समझ सकता तो फिर कौन सी बात है जिसे संसार समझ सकता है ?

انا انزلنا التورية فيه
هدى ونور ثم قفينا على
آثارهم بعيسى ابن مريم
وانزلنا اليك الكتاب
بالحق مصدقا لما بين
يديه۔

सूरा ५ मे एक विशेष क्रम से कुरान से पहले के धर्मों के उत्थान का वर्णन किया गया है । यह वर्णन हज़रत मूसा और तौरात से आरम्भ होता हैं । फिर हज़रत मसीह के जहूर (आविर्भाव) का वर्णन किया जाता है ।

मसीह के बाद इस्लाम के पैग़म्बर का आविर्भाव हुआ ।

फिर इन भिन्न-भिन्न उपदेशों के वर्णन के बाद कुरान लोगो को मुख़ातिब करते हुए कहता है—

لكل جعلنا منكم شرعة ومنهاجا. ولو شاء الله لجعلكم امة واحدة ولكن ليبلوكم فی ما آتيكم فاستبقوا الخيرات

हमने तुम मे से हर एक के लिए यानी प्रत्येक धर्म के अनुयायियों के लिए) एक खास विधि-विधान नियत कर दिया है । अगर परमात्मा चाहता तो (विधियों और विधानों में कोई अन्तर ही न होता) तुम सब को एक ही सम्प्रदाय बना देता । परन्तु यह विभिन्नता इसलिए हुई कि (समय और अवस्था के अनुसार) तुम्हें जो आज्ञाएँ दी गई है उन्ही में तुम्हारी परीक्षा करे । इसलिए (इन विभिन्नताओं के पीछे न पड़कर) नेकी की राहों में एक दूसरे से आगे निकल जाने का प्रयत्न करो (क्योंकि असली काम यही है) । —सू० ५, आ० ४८

इस आयत पर एक सरसरी नजर डालकर आगे न बढ जाओ, बल्कि इसके एक-एक शब्द पर ग़ौर करो । जिस समय कुरान का आविर्भाव हुआ उस समय ससार का यह हाल था कि समस्त धर्मो के अनुयायी धर्म को सिर्फ उसकी बाहरी क्रियाओं और रस्मों में ही देखते थे और धार्मिक विश्वास का सारा जोश-ख़रोश इसी तरह की बातां तक सीमित रह गया था । प्रत्येक धर्म के अनुयायी यही विश्वास करने थे कि दूसरे धर्मवालो को कभी मुक्ति नही मिल सकती,

क्योंकि वे देखते थे कि दूसरे धर्मवालों की क्रियाएँ और रस्में वैसी नही है जैसी कि उन्होंने स्वय अख्तियार कर रखी है। परन्तु कुरान कहता है कि नही, यह क्रियाएँ और रस्में न तो धर्म की असल और हकीकत है और न उनका भेद सत्य और असत्य का भेद है। यह सब धर्म के केवल व्यावहारिक जीवन का ऊपरी ढाँचा है, तत्त्व और सार इससे उच्चतर है, और वही वास्तविक धर्म है। यह वास्तविक धर्म क्या है?—एक परमात्मा की उपासना और सदाचरण का जीवन। यह किसी एक गिरोह की पैतृक सम्पत्ति नही है जो उसके सिवा किसी और को न मिली हो। यह सब धर्मो में समान रूप से मौजूद है, क्योकि यही धर्म की असल यानी जड़ है। इसलिए न तो इसमे परिवर्तन हुआ और न किसी तरह का अन्तर ही। क्रियाएँ और रस्में गौण है, देश और काल के अनुसार ये सदा बदलती रही हैं और जो कुछ भी अन्तर हुआ है इन्ही में हुआ है।

फिर क़ुरान पूछता है कि क्रियाओं और रस्मों की इस भिन्नता को तुम इतना महत्त्व क्यों दे रहे हो? परमात्मा ने प्रत्येक देश और प्रत्येक युग के लिए एक विशेष प्रकार की रीति-नीति स्थिर कर दी, जो उसकी आवश्यकता और अवस्था के उपयुक्त थी और लोग उसी पर कारबन्द है। यदि परमात्मा चाहता तो समस्त मानव-जाति को एक ही कौम बना देता और विचारों और क्रियाओं की कोई भिन्नता उत्पन्न ही न होने देता। किन्तु ईश्वर ने ऐसा नही चाहा। उसकी सर्वज्ञता ने यही उचित समझा कि विचारों और क्रियाओं की भिन्न-भिन्न अवस्थाएँ उत्पन्न हों। इसलिए इस भिन्नता को सत्य और असत्य की भिन्नता क्यो मान ली जाय? क्यों इस

भिन्नता के कारण एक गिरोह दूसरे गिरोह से लड़ने के लिए तैयार रहे ? असल चीज़ जिस पर सारा ध्यान देना चाहिए नेकी के काम है, और समस्त ऊपरी क्रियाएँ और रस्मे इसीलिए है कि उनके द्वारा हम नेकी की राह पर क़ायम रह सके ।

ग़ौर करो इस आयत में कहा गया है कि हमने तुम में से प्रत्येक धर्म के अनुयायो के लिए एक विधि-विधान (शरअ और मिनहाज) ठहरा दिया है, इसमे यह नही कहा गया कि एक धर्म (दीन) ठहरा दिया है । क्योकि धर्म तो सबके लिए एक ही है, धर्म एक से अधिक या कई तरह का नही हो सकता । हाँ, विधि-विधान सबके लिए एक तरह का नही हो सकता । हर समय और हर देश की स्थिति और योग्यता के अनुसार विधि-विधान का भिन्न-भिन्न होना ज़रूरी था, अर्थात् विविध धर्मो की भिन्नता तात्विक अथवा मौलिक भिन्नता नही है वरन् केवल वाह्य अथवा गौण चीज़ों की भिन्नता है ।

यहाँ यह बात याद रखनी चाहिए कि जहाँ भी क़ुरान ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि अगर परमात्मा चाहता तो सारे मनुष्य एक ही मार्ग पर एकत्र हो जाते या एक ही जाति बन जाते, जैसा कि ऊपर की आयत मे बयान किया गया है । वहाँ उन सब आयतों का मतलब इसी सत्य को स्पष्ट करना है । क़ुरान चाहता है यह बात लोगों के दिल में बैठा दी जाय कि विचारों और क्रिया की भिन्नता मनुष्य-स्वभाव की एक विशेषता है, और जिस तरह यह भिन्नता और सब बातों में पाई जाती है उसी तरह धार्मिक बातों में भी मौजूद है । इसलिए इस भिन्नता को सत्य और असत्य की कसौटी नही समझना चाहिए । क़ुरान कहता है

कि जब परमात्मा ने मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा बनाया है कि प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक जाति, प्रत्येक ज़माना, अपनी-अपनी समझ, अपनी-अपनी पसन्द और अपना-अपना तौर-तरीक़ा रखता है, और यह सम्भव नही कि किसी एक छोटी से छोटी बात में भी सब मनुष्यों का स्वभाव एक तरह का हो जाय, तो फिर यह कब सम्भव था कि धार्मिक क्रियाएँ और रस्में भिन्न-भिन्न न होतीं। और सब एक ही ढग अख्तियार कर लेते। यहाँ भी भेद होना था और हुआ। किसी ने एक साधन से और किसी ने दूसरे साधन से असली लक्ष्य तक पहुँचना चाहा। परन्तु असली लक्ष्य में, यानी ईश्वरोपासना और सदाचरण की शिक्षा मे, सभी एक मत रहे। किसी भी धर्म ने यह शिक्षा नही दी कि ईश्वर की उपासना नही करनी चाहिए। किसी ने भी यह नही सिखलाया कि झूठ बोलना सच बोलने से बेहतर है। इसलिए जब सब का मूल लक्ष्य एक ही है तो केवल बाहरी चीजों और क्रियाओं की विभिन्नता से क्यों कोई किसी का विरोधी और दुश्मन बन जाय ? क्यों हर गिरोह दूसरे गिरोह को झुठलावे ? क्यों धार्मिक सच्चाई किसी एक ही जाति या सम्प्रदाय की बपौती समझ ली जाय।

एक स्थल पर ख़ुद पैग़म्बर मुहम्मद को मुख़ातिब करते हुए, क़ुरान कहता है कि तुम जोश में आकर चाहते हो कि सब लोगों को अपने ही मार्ग पर ले आओ, परन्तु तुम्हें यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि विचारों और क्रियाओं की विभिन्नता मनुष्य-स्वभाव की नैसर्गिक विशेषता है। तुम ज़बरदस्ती कोई बात किसी के गले में नहीं उतार सकते।

ولو شاءَ ربك لآمن
من فى الارض كلهم جميعا
افانت تكره الناس حتے
يكونوا مؤمنين ·

और अगर तुम्हारा पालन-कर्त्ता चाहता तो इस पृथ्वी पर जितने भी मनुष्य है सब के सब तुम्हारी बात मान लेते, (लेकिन तुम देख रहे हो कि उसके कौशल का यही निश्चय है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी-अपनी समझ और अपनी-अपनी राह रखे) । फिर क्या तुम चाहते हो कि लोगो को मजबूर कर दो कि सब तुम्हारी ही बात माने ? —सू० १०, आ० ६६

क़ुरान कहता है कि मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा बना है कि हर गिरोह को अपना ही तौर-तरीका अच्छा दिखाई देता है, वह अपनी बातों को अपने विरोधियों की दृष्टि से नही देख सकता। जिस तरह तुम्हारी दृष्टि मे तुम्हारा ही मार्ग सर्वश्रेष्ठ है, ठीक उसी तरह दूसरों की दृष्टि मे तुम्हारा ही मार्ग सर्वश्रेष्ठ है । इसलिए इस बारे मे अपने अन्दर सहिष्णुता और उदार दृष्टि पैदा करो; इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं ।

और (देखो), जो लोग परमात्मा को छोड़कर दूसरों की उपासना करते हैं, तुम उन्हें बुरा मत कहो, क्योंकि (नतीजा यह

ولا تسبوا الذين يدعون من دون الله فيسبوا الله عدوا بغير علم. كذلك زينا لكل امة عملهم. ثم الى ربهم مرجعهم فينبئهم بما كانوا يعملون.

होगा कि) वे लोग भी द्वेष और नादानी से परमात्मा को भला-बुरा कहने लगेंगे। (स्मरण रखो) हमने मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा बनाया है कि प्रत्येक गिरोह को अपने ही काम अच्छे दिखलाई पड़ते है। फिर अन्त मे सब को अपने परवरदिगार की ओर लौटना है, और वही हर गिरोह को उसके कर्मो की असलीयत बतलायेगा।

—सू० ६, आ० १०८

४. साम्प्रदायिकता

गिरोह-परस्ती

अच्छा, जब सारे धर्मों का मुख्य लक्ष्य एक ही है और सब की बुनियाद सत्य पर है तो फिर कुरान की क्यों आवश्यकता हुई ? कुरान का उत्तर है कि यद्यपि सब धर्म सच्चे हैं लेकिन उन सब के अनुयायी सत्य से हट गये हैं । इसलिए यह आवश्यक हुआ कि सब को उनकी खोई हुई सच्चाई पर नये सिरे से क़ायम कर दिया जाय ।

इस सम्बन्ध मे क़ुरान ने विविध धर्मों के अनुयायियों की सारी गुमराहियाँ एक-एक करके गिनाई है। यह गुमराहियाँ विश्वाससम्बन्धी और व्यवहारसम्बन्धी दोनों तरह की हैं । इनमें एक सबसे बड़ी गुमराही जिस पर जगह-जगह ज़ोर दिया गया है वह है जिसे क़ुरान साम्प्रदायिकता (तशय्यु) और दलबन्दी (तहज़्ज़ुब) का नाम देता है, यानी अलग-अलग जत्थे और दल बनाकर उनमें ऐसे भावों का पैदा कर देना जिससे लोग असली दीन यानी ईश्वरोपासना और सदाचरण को छोड़कर अपने दल विशेष की पूजा और उसी के विधि-विधान को अपना ध्येय मान बैठे । इसी को क़ुरान साम्प्रदायिकता यानी गिरोह-परस्ती का नाम देता है ।

ان الذين فرقوا دينهم وكانوا شيعا لست منهم فى شئ . انما امرهم الى الله ثم ينبئهم بما كانوا يفعلون .

जो लोग अपने धर्म के टुकड़े-टुकड़े कर अलग-अलग गिरोहों में बँट गये, उनसे तुम्हें कोई वास्ता नही। उनका मामला खुदा के हवाले है। जैसे कुछ उनके कर्म रहे है उसका नतीजा खुदा उन्हें बतला देगा।

—सू० ६, आ० १६०

فتقطعوا امرهم بينهم زبرا كل حزب بما لديهم فرحون .

फिर लोगों ने एक दूसरे से पृथक् होकर अलग-अलग धर्म बना लिये; हर टोली के पल्ले जो कुछ पड़ गया वह उसी में मग्न है। —सू० २३, आ० ५४

साम्प्रदायिकता और दलबन्दी की गुमराही से क्या मतलब है, इसे विस्तारपूर्वक समझ लेना चाहिए। क़ुरान कहता है, ईश्वर के बताये हुए धर्म का तत्त्व तो यह है कि वह मानव-जाति पर ईश्वरोपासना और सदाचरण के मार्ग खोल दे, यानी ईश्वर के इस नियम को घोषित कर दे कि संसार की अन्य वस्तुओं की तरह मनुष्य के कर्मो के भी अलग-अलग गुण और अलग-अलग फल होते है, अच्छे कर्मो का फल अच्छा और बुरे कर्मो का फल बुरा होता है। परन्तु लोग इस सच्चाई को तो भूल गये और धर्म की असलीयत केवल वंशों, जातियों, देशों और तरह-तरह के रीति-रिवाजों को ही समझ बैठे। नतीजा यह हुआ कि अब मनुष्य की मुक्ति और उसके कल्याण का मार्ग यह नहीं समझा जाता कि उसका विश्वास या उसके कर्म

कैसे है, बल्कि सारा दार-मदार इस पर आ गया कि कौन किस विशेष जत्थे या समुदाय मे शामिल है और कौन नही है। अगर एक आदमी किसी ख़ास मज़हबी गिरोह में शामिल है तो यह विश्वास किया जाता है कि उसे मुक्ति मिल गई और उसने धार्मिक सत्य प्राप्त कर लिया। अगर वह शामिल नहीं है तो विश्वास किया जाता है कि मुक्ति का द्वार उसके लिए बन्द है और धार्मिक सच्चाई में उसका कोई हिस्सा नहीं। मानो साम्प्रदायिकता और दलबन्दी ही धर्म की सच्चाई, अन्त समय की मुक्ति और सत्य तथा असत्य की कसौटी है। विश्वास और कर्म कोई चीज ही नही रहे। यद्यपि समस्त धर्मो का लक्ष्य एक ही है। और सब एक ही विश्वम्भर प्रभु के उपासक है तथापि प्रत्येक सम्प्रदाय का यही विश्वास है कि धर्म की सत्यता केवल उसी के पल्ले पड़ी है और बाकी सारे मनुष्य उससे वञ्चित है। इसलिए प्रत्येक धर्म का अनुयायी दूसरे धर्मो के विरुद्ध घृणा और पक्षपात की शिक्षा देता है और संसार मे ईश्वरोपासना और धर्म का मार्ग सर से पैर तक ईर्षा और द्वेष, घृणा और बर्बरता, हत्या और रक्तपात का मार्ग हो गया है। इस सम्बन्ध मे क़ुरान ने जिन महान् बातो पर ज़ोर दिया है उनमें तीन सबसे स्पष्ट हैं--

१. मनुष्य का कल्याण और उसकी मुक्ति उसके विश्वास और उसके कर्मों पर निर्भर है, न कि सम्प्रदायविशेष पर।

२. मनुष्यमात्र के लिए ईश्वरीय धर्म एक ही है और एक समान सब को उसकी शिक्षा दी गई है। इसलिए धर्मो के अनुयायियों ने धर्म की एकता और उसके विश्वव्यापी तत्त्व को नष्ट कर जो बहुत से विरोधी और परस्पर लड़नेवाले जत्थे बना लिये हैं, यह

साफ उनकी गुमराही है ।

३. धर्म की जड़ एकेश्वरवाद है, यानी एक विश्वम्भर प्रभु की सीधी उपासना ।

और सब धर्म-प्रवर्तकों ने इसी की शिक्षा दी है । इसके ख़िलाफ़ जितने विश्वास और धर्म स्वीकार कर लिये गये है, वे सब असलीयत से हट जाने के नतीजे है ।

ऊपर की आयतों के अतिरिक्त निम्नलिखित आयतों में भी इसी तत्त्व पर ज़ोर दिया गया है ।

وقالوا لن يدخل الجنة
الا من كان هودا او نصارى
تلك امانيهم . قل هاتوا
برهانكم ان كنتم صادقين.
بلى من اسلم وجهه لله وهو
محسن فله اجره عند ربه
ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون.

और यहूदियों और ईसाइयों ने कहा कि स्वर्ग में ऐसे किसी मनुष्य का प्रवेश नही हो सकता जो यहूदी या ईसाई न हो । यह उन लोगों का केवल वहम है, (वास्तविकता यह नही है । ऐ पैग़म्बर !) इनसे कह दो कि अगर तुम सच्चे हो तो बतलाओ तुम्हारी दलील क्या है ? हाँ, (निस्सन्देह मुक्ति का मार्ग खुला हुआ है, वह मार्ग किसी सम्प्रदाय-विशेष के लिए नहीं है । वह मार्ग तो आस्तिकता और नेक कामों का मार्ग है) । जिस किसी ने परमात्मा के आगे सर झुकाया और सदाचारी हुआ,

(वह चाहे यहूदी हो या ईसाई या कोई और) वह अपने पालनहार से अपना फल पायेगा, और उसके लिए न तो किसी तरह का भय है और न कोई शोक।

—सू० २, आ० १०६

सूरा २ में यही हकीक़त और भी साफ शब्दों में कही गई है।

ان الذين امنوا والذين هادوا
والنصارى والصابئين من امن
بالله واليوم الاخر وعمل صالحا
فلهم اجرهم عند ربهم . ولا
خوف عليهم ولا هم يحزنون .

जो लोग (पैगम्बर पर) ईमान लाये हैं चाहे वे हों, या वे लोग हों जो यहूदी या ईसाई या साबी हैं कोई भी क्यों न हो, (और किसी भी सम्प्रदाय से क्यो न हो, परमात्मा का क़ानून मुक्ति के लिए यह है कि) जो भी परमात्मा पर और ईश्वरीय न्याय (यानी क़ियामत) पर ईमान लाया, और जिसके कर्म अच्छे हुए, वह अपने विश्वास और कर्मों का फल अपने पालनहार प्रभु से अवश्य पायेगा। उसके लिए न तो किसी तरह का खटका है, न किसी तरह का शोक। —सू० २, आ० ५६

यानी धर्म का लक्ष्य ता ईश्वरोपासना और नेक काम थे, धर्म

किसी सम्प्रदायविशेष का नाम नही था। कोई भी मनुष्य, चाहे वह किसी वंश या जाति का क्यों न हो, और किसी भी नाम से पुकारा जाता हो, अगर वह ईश्वरनिष्ठ और सदाचारी है तो वह ईश्वरीय पथ का पथिक है और उसे मुक्ति प्राप्त होगी। लेकिन यहूदियों और ईसाइयों ने इसके विरुद्ध अपनी-अपनी पैतृक और साम्प्रदायिक गिरोहबन्दियों के क़ानून बना लिये। यहूदियों ने साम्प्रदायिकता का एक दायरा बनाया और उसका नाम यहूदी-मत रखा। जो इस दायरे के अन्दर है वह सत्य पर है और उसके लिए मुक्ति भी है। जो इसके बाहर है वह असत्य पर है और उसे कभी मुक्ति नही मिल सकती। इसी तरह ईसाइयों ने भी अपना एक दायरा बनाकर उसका नाम ईसाई-मत रख लिया। जो इसमें दाखिल है केवल वही सच्चाई पर है और केवल उसी के लिए मुक्ति है, और जो उसके बाहर है न उसका सत्य में कोई हिस्सा है, और न वह मुक्ति प्राप्त कर सकता है। अब रहे मनुष्य के कर्म सो उनका नितान्त कोई मूल्य ही नही रहा। चाहे कोई व्यक्ति कितना ही ईश्वरनिष्ठ और सदाचारी क्यों न हो, पर यदि वह यहूदियों की पैतृक गिरोहबन्दी या ईसाइयों की साम्प्रदायिक गिरोहबन्दी में दाखिल नही है तो कोई भी यहूदी अथवा ईसाई उसे सत्पथ का अनुगामी नहीं मान सकता। इसके विपरीत यदि बुरे से बुरे कर्मों का करनेवाला भी इनमे से किसी सम्प्रदाय में शामिल है तो उसके सम्प्रदायवाले उसे मुक्ति का अधिकारी समझते है। यहूदियों और ईसाइयों के इसी विश्वास को क़ुरान इन शब्दों में प्रकट करता है—"कूनू हूदन और नसारा तहतदू", यानी इन लोगों के अनुसार ईश्वरनिष्ठा और अच्छे कर्मो की राह ईश्वरप्रदर्शित राह नही है,

बल्कि यहूदी और ईसाई सम्प्रदाएँ ही ईश्वरप्रदर्शित राहें है। जब तक कोई व्यक्ति यहूदी अथवा ईसाई न हो जाय तब तक वह सत्पथ का गामी नहीं हो सकता। फिर क़ुरान इस विचार का खण्डन करते हुए कहता है—परमात्मा की हिदायत जो ससार का एक सर्वव्यापी नियम है, भला इन लोगों की अपनी गढ़ी हुई गिरोहबन्दियों मे क्योकर परिमित हो सकती है ? "बला, मन अस्लम वजहहू लिल्लाहे व होव मुहसिन।" इस वाक्य के ज़ोर और उसकी व्यापकता पर ध्यान दो। कोई भी व्यक्ति, किसी भी वश, जाति या सम्प्रदाय का क्यो न हो यदि उसने परमात्मा के सम्मुख मुक्तिभाव से सर झुकाया और सदाचार का जीवन व्यतीत करना अंगीकार कर लिया, तो उसने मुक्ति और कल्याण प्राप्त कर लिया, उसके लिए कोई खटका अथवा ग़म नहीं है।

धार्मिक सच्चाई की व्यापकता का इससे ज़्यादा साफ़ और सार्वभौमिक एलान और क्या हो सकता है ?

وقالت اليهود ليست النصارى
على شيء وقالت النصارى
ليست اليهود على شيء وهم
يتلون الكتاب كذلك
قال الذين لا يعلمون مثل
قولهم. فالله يحكم بينهم يوم
القيامة فيما كانوا فيه يختلفون

और यहूदियों ने कहा कि ईसाइयों का धर्म कुछ नही है। इसी तरह ईसाइयों ने कहा कि यहूदियों के पास क्या धरा है ? हालाँकि दोनों ईश्वरीय ग्रन्थ पढ़ते है, और दोनों के धर्म का उद्गम-स्थान एक ही है। ठीक ऐसी ही बाते वे लोग करते हैं जो धर्मग्रन्थों का ज्ञान नहीं रखते (यानी अरब के प्राचीन

धर्मावलम्बी जो यहूदियों और
ईसाइयो की तरह केवल अपने
ही को मुक्ति का पैतृक अधिकारी
समझते थे)। अच्छा, जिस बात
को लेकर यह परस्पर झगड़ रहे
हैं अन्तिम न्याय के दिन पर-
मेश्वर उसका फैसला कर देगा
(और उसी समय हकीकत सब
पर प्रकट हो जायगी)।

—सू० २, आ० ११३

अर्थात् यद्यपि परमात्मा का बताया हुआ धर्म एक ही है और एक ही ईश्वरीय ग्रन्थ यानी तौरात दोनो के सामने मौजूद है, फिर भी इस धार्मिक गिरोहबन्दी का परिणाम यह हुआ कि दो परस्पर विरोधी और एक दूसरे को झूठा कहनेवाले जत्थे कायम हो गये। प्रत्येक जत्था दूसरे जत्थे को झुठला रहा है और हर जत्था सिर्फ अपने को ही मुक्ति और कल्याण का ठेकेदार समझता है।

प्रश्न यह है कि जब धर्म एक होने के स्थान पर अगणित जत्थों और सम्प्रदायों मे बँट गया और हर जत्था केवल अपने ही को सच्चा और बाकी सब को झूठा बतलाने लगा तो अब इस बात का फैसला कैसे हो कि वास्तव मे सत्य कहाँ है ? कुरान कहता है कि वास्तविक सत्य तो सब के पास है किन्तु व्यवहार मे सब ने उसे खो रखा है। सब को एक ही धर्म की शिक्षा दी गई थी और सब के लिए एक ही विश्वव्यापी हिदायत थी, लेकिन सब ने वास्तविक

तत्त्व को नष्ट कर दिया और ईश्वरीय पथ पर मिल-जुल कर रहने के स्थान पर अलग-अलग गिरोहबन्दियाँ कर लीं। अब प्रत्येक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय से लड़ रहा है और समझता है कि मुक्ति और कल्याण मेरी ही पैतृक सम्पत्ति है, दूसरों का इसमें कोई हिस्सा नही।

सूरा २ मे ऊपर की आयत के बाद ही निम्नलिखित बयान आता है—

ومن اظلم ممن منع
مساجد الله ان یذکر فیها
اسمه وسعى فى خرابها اولئك
ماكان لهم يدخلوها الا
خائفين. لهم فى الدنيا
خزى ولهم فى الآخرة عذاب
عظيم.

और (ग़ौर करो), उससे बढ़ कर अन्यायी और कौन हो सकता है जो परमात्मा के उपासना-मन्दिरो में किसी को परमात्मा के स्मरण और कीर्त्तन करने से रोके अथवा उन मन्दिरों के नष्ट करने का प्रयत्न करे? जो लोग ऐसे ज़ुल्म और उपद्रव करते है, वे वास्तव में इस योग्य नही है कि परमात्मा के मन्दिरों में पैर भी रखें (वे तभी उन मन्दिरों में प्रवेश कर सकते है जब दूसरो को डराने के स्थान पर वे स्वयं दूसरों से डरें और अन्याय तथा उपद्रव करने का साहस उनमे न रहे)। स्मरण

रखो, ऐसे आदमियों को इस
लोक में अपकीर्ति और परलोक
मे महान् यत्रणा भोगनी होगी।
—सू० २, आ० ११४

यानी, विविध धर्मो की इस गिरोहबन्दी का परिणाम यह हुआ कि परमात्मा के उपासना-मन्दिर तक अलग-अलग हो गये। यद्यपि सब धर्मो के अनुयायी एक ही परमात्मा के माननेवाले है, तथापि यह सम्भव नही कि एक धर्म का अनुयायी दूसरे धर्मवालों के बनाये हुए उपासना-मन्दिर मे जाकर परमात्मा का नाम ले सके। इतना ही नही, बल्कि प्रत्येक सम्प्रदाय के लोग केवल अपने ही उपासना--मन्दिर को ईश्वर की उपासना का स्थान समझते है और दूसरे सम्प्रदायों के उपासना-गृहों का उनकी नज़रों में कोई आदर ही नही। यहॉ तक कि लोग कभी-कभी धर्म के नाम पर उठकर दूसरों के उपासना-गृहों को नष्ट-भ्रष्ट तक कर डालते है। क़ुरान कहता है इससे बढकर अन्याय मनुष्य और क्या कर सकता है कि खुदा के बन्दों को उसकी पूजा करने से रोके। और केवल इसलिए रोके कि वे किसी दूसरे सम्प्रदाय मे शामिल है, या किसी उपासना-गृह को केवल इसलिए गिरा दे कि वह हमारा नही बल्कि दूसरे सम्प्रदाय-वालों का बनवाया हुआ है। क्या तुम्हारे गढ़े हुए सम्प्रदायों की भिन्नता से परमात्मा भी भिन्न-भिन्न हो गया ? क्या एक सम्प्रदाय-का बनवाया हुआ उपासना-गृह परमात्मा का उपासना-मन्दिर है, और दूसरो का बनवाया हुआ उपसाना-गृह परमात्मा का उपासना-मन्दिर नही है ?

ولا تؤمنوا الا لمن تبع
دينكم قل ان الهدیٰ هدى
الله ان يؤتى احد مثل ما
اوتيتم او يحاجوكم عند ربكم
قل ان الفضل بيد الله يؤتيه
من يشاء والله واسع عليم

और (यहूदी लोग आपस मे एक दूसरे से कहते है कि) सिवा उनके जो तुम्हारे दीन की पैरवी करते है और किसी की बात न मानो। (ऐ पैगम्बर !) उनसे कह दो कि परमात्मा की हिदायत ही असली हिदायत है (और वह सबके लिए एक समान खुली है, किसी सम्प्रदाय विशेष के लिए ही नही), और वह (यहूदी लोग) एक दूसरे से कहते है कि यह बात कभी न मानो कि जो धार्मिक सत्य तुम्हें दिया जा चुका है वह अब किसी दूसरे को भी मिल सकता है, या परमात्मा के सामने यहूदियों के विरुद्ध किसी दूसरे की कोई बात चल सकेगी। (ऐ पैग़म्बर !) तुम इनसे कह दो कि परमात्मा की देन और उसके प्रसाद का भण्डार तुम्हारे हाथों में नही है, वह उसी के हाथो मे है। वह चाहे जिसे दे। वह सर्वव्यापक और सर्वज्ञ है।—सू० ३, आ० ७४

यानी, यहूदियों का विश्वास यह है कि धर्म की जो हिदायत ईश्वर ने उन्हें दी है वह केवल उन्ही को दी है; सम्भव नही कि वह हिदायत किसी दूसरे व्यक्ति या जाति को प्राप्त हो सके। इसलिए वे कहते हैं कि अपने सम्प्रदाय के लोगो के सिवा और किसी की भी सच्चाई या श्रेष्ठता को स्वीकार न करो, और न यह मानो कि परमात्मा के सामने तुम्हारे (यहूदियो के) विरुद्ध किसी भी आदमी की दलील चल सकती है। कुरान इस झूठे गुमान का खण्डन करता है और कहता है कि "इन्नल हुदा हुदल्लाह," यानी परमात्मा की हिदायत ही असली हिदायत है। उस प्रभु की कृपा किसी एक व्यक्ति या समुदाय के लिए ही नही बल्कि सबके लिए है। इसलिए जो भी व्यक्ति ईश्वर की हिदायत की हुई राह पर चलेगा वह सत्य का अनुयायी समझा जायगा, चाहे वह यहूदी हो चाहे कोई और।

यहूदियो मे साम्प्रदायिक गर्व इतना बढ़ गया था कि वे कहते थे कि परमात्मा ने दोज़ख की आग हम पर हराम कर दी है, और अगर हम में से कोई नरक में डाला भी जायगा तो इसलिए नही कि उस पर ईश्वर का कोप है, बल्कि इसलिए कि अपने गुनाहो के दाग़-धब्बों से पाक-साफ़ होकर वह फिर जन्नत मे दाखिल हो।

क़ुरान इनके इस झूठे गुमान को जगह-जगह बयान करता है और उसका खण्डन करते हुए पूछता है कि यह बात तुम्हें कहाँ से मालूम हुई कि यहूदी-सम्प्रदाय का प्रत्येक व्यक्ति मुक्तिप्राप्त है और उसे परलोक की यत्रणा से छुटकारा मिल चुका है ? क्या तुम्हे परमात्मा ने बिना शर्त के मुक्ति का पट्टा लिखकर दे दिया है, कि जहाँ कोई व्यक्ति यहूदी हुआ दोजख की आग उस पर हराम हो गई ? अगर नही दिया तो फिर बतलाओ ऐसा विश्वास करना

जिस किसी ने भी बुराई कमाई और जो पापो से घिर गया, वह नारकी अर्थात् सदा नरक में रहनेवाला है, और जिस किसी ने भी ईमान (विश्वास) का मार्ग ग्रहण किया और जो सदाचारी हुआ वह बहिश्ती है और सदा बहिश्त (स्वर्ग) में रहनेवाला है।—सू० २, आ० ७४, ७५

सूरा ४ मे सिर्फ यहूदियो और ईसाइयो को ही नही, बल्कि सब को सबोधन करते हुए, साफ-साफ एलान किया गया है, जिसे जान लेने के बाद किसी प्रकार के भी सन्देह या भ्रम की गुन्जाइश नहीं रहती।

ليس بامانيكم ولا امانى
اهل الكتاب . من يعمل
سوء يجزبه ولا يجد له من
دون الله وليا ولا نصيرا .

(मुसलमानो ! याद रखो, मुक्ति और कल्याण) न तो तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है और न अन्य ईश्वरीय ग्रन्थ रखनेवालों की इच्छा पर ही। (ईश्वरीय नियम तो यह है कि) जो कोई भी बुराई करेगा उसका फल उसे भोगना होगा। उस समय न तो किसी की मित्रता ही उसे ईश्वरीय कोप से बचा सकेगी और न किसी की सहायता।

—सू० ४, आ० १२३

इन धार्मिक दलबन्दियो ही के परिणामरूप यहूदी समझते थे कि सच्चाई और ईमानदारी की जो कुछ भी आज्ञाएँ ईश्वर ने दी हैं वह इसलिए नही है कि सब मनुष्यो के साथ सच्चाई और ईमानदारी का व्यवहार किया जाय, बल्कि केवल इसलिए है कि एक यहूदी दूसरे यहूदी के साथ बुराई न करे। वे कहते थे कि अगर कोई व्यक्ति हमारा सहधर्मी नही है तो हमारे लिए उचित है कि हम जिस तरह भी चाहे, उससे फायदा उठाये, सच्चाई और ईमानदारी के नियमो को ध्यान मे रखने की हमे कोई आवश्यकता नही। इसलिए व्यापार मे सूद लेने की मनाई उन्होने सिर्फ़ अपने ही सहधर्मियों तक परिमित कर दी थी, और आज तक उनका यही व्यवहार चला आता है। वे कहते है कि एक यहूदी को दूसरे यहूदी से सूद नही लेना चाहिए। लेकिन एक यहूदी अगर किसी ग़ैर यहूदी से सूद ले तो कोई हरज नही। कुरान उनके इस विश्वास का जिक्र करते हुए उसे उनका एक बहुत बड़ा भ्रम करार देता है।

واخذهم الربوا وقد نهوا عنه واكلهم اموال الناس بالباطل.

उनका (यहूदियों का) सूद खाना, हालाँकि वे इससे रोक दिये गये थे, और उनकी यह बात कि लोगो का माल अनुचित उपायों से खा लेते थे....। —सू० ४, आ० ५९

इसी तरह जो यहूदी अरब में निवास करते थे, वे कहते थे कि अरब के अशिक्षित निवासियों के साथ व्यवहार करने मे हमे दियानतदारी और सच्चाई की कोई आवश्यकता नही, ये लोग मूर्ति-

पूजक है, हम इन लोगों का धन जिस तरह भी खा लें हमारे लिए जायज़ है।

ذلك بانهم قالوا ليس علينا فى الاميين سبيل. يقولون على الله الكذب وهم يعلمون. بلى من اوفى بعهده واتقى فان الله يحب المتقين

(यहूदियों की) इस बेईमानी का कारण यह है कि वे कहते है कि (अरब के इन) अशिक्षित लोगो के साथ (बेईमानी करने मे) हम से कोई पूछ-ताछ नही होगी (जिस तरह भी हम चाहे इनका माल खा ले सकते है, हालाँकि) ऐसी बात कहकर वे साफ परमात्मा के नाम पर झूठ गढते है। वे जानते है कि ईश्वरीय धर्म की यह आज्ञा नही हो सकती। हाँ, (इनसे पूछा जायगा और अवश्य पूछा जायगा, क्योकि परमात्मा का नियम तो यह है कि) जो कोई अपने वचन को सच्चाई से पूरा करता है और बुराई से बचता है, वही परमात्मा की प्रसन्नता प्राप्त करता है, और परमात्मा बुराई से बचनेवालों से प्रेम करता है।—सू० ३, आ० ७०

यानी, ऐसा विश्वास रखना परमात्मा के धर्म पर प्रत्यक्ष झूठ थोपना है। ईश्वर का बताया हुआ धर्म तो यह है कि हर एक व्यक्ति के साथ नेकी करनी चाहिए, और हर अवस्था मे सच्चाई और दियानतदारी से काम लेना चाहिए, चाहे कोई भी व्यक्ति हो और किसी भी धर्म या सम्प्रदाय का क्यों न हो, क्योंकि सफेद हर हाल मे सफेद है और काला हर हाल मे काला है। कोई सफेद वस्तु इसलिए काली नही हो सकती कि वह किसी विशेष आदमी को दी गई है, और कोई काली चीज इसलिए सफेद नही हो सकती कि वह किसी जाति अथवा सम्प्रदायविशेष के हाथ से निकली है। इसलिए दियानतदारी हर हाल मे दियानतदारी है और बद-दियानती हर हालत मे बद-दियानती है।

कुरान के आविर्भाव के समय अरब मे तीन बड़े-बड़े मजहबी गिरोह थे, यहूदी, ईसाई, और अरब के मूर्तिपूजक। और ये तीनो हज़रत इब्राहीम को एक समान प्रतिष्ठा और आदर की दृष्टि से देखते थे, क्योकि तीनो सम्प्रदायवालों के आदिपुरुष इब्राहीम ही थे। इसलिए क़ुरान इन धार्मिक गिरोहबन्दियों की गुमराही को स्पष्ट करने के लिए एक निहायत सीधा-सादा प्रश्न इन तीनो के सामने रखता है। वह कहता है कि यदि दीन की सच्चाई सम्प्रदायविशेष पर ही निर्भर है तो बतलाओ हजरत इब्राहीम किस सम्प्रदाय के थे ? उस समय तक न तो यहूदी-मत का आविर्भाव हुआ था और न ईसाई-मत का, और न उस समय तक किसी और ही सम्प्रदाय का अस्तित्व था ? फिर यदि हज़रत इब्राहीम किसी भी सम्प्रदायविशेष के न होने पर भी सच्चे धर्म के मार्ग पर थे, तो बतलाओ वह मार्ग कौन सा था ? कुरान कहता है कि

वह उसी सच्चे धर्म का मार्ग था जो तुम्हारी अपनी गढी हुई दल-बन्दियों से उच्चतर और अखिल मानव-जाति के लिए एक समान मुक्ति का मार्ग है—यानी एक ही परमेश्वर की सीधी-सादी उपासना और सदाचार की ज़िन्दगी।

وقالوا كونوا هودا او نصارى تهتدوا. قل بل ملة ابراهيم حنيفا. وما كان من المشركين

और यहूदी कहते है, यहूदी हो जाओ, हिदायत पाओगे। ईसाई कहते है, ईसाई हो जाओ, हिदायत पाओगे। (ऐ पैम्गबर !) तुम कह दो, नही, (परमात्मा की विश्वव्यापी हिदायत तुम्हारी इन गिरोहबन्दियो में नही जकड़ी जा सकती), हिदायत का रास्ता तो वही सीधा रास्ता है जो इब्राहीम का था और नि.सन्देह इब्राहीम मुशरिक[1] न था।

—सू० २, आ० १२९

يا اهل الكتاب لم تحاجون في ابراهيم وما انزلت التورىة والانجيل الا من بعده افلا تعقلون

ऐ धर्मग्रन्थों के मानने-वालो ! तुम इब्राहीम के बारे मे क्यों बहस करते हो जब कि यह बात बिल्कुल साफ है कि तौरात और इञ्जील इब्राहीम के बहुत बाद उतरी ? क्या

१. जो एक ईश्वर को छोड़कर किसी दूसरे की पूजा करे।

ऐसी मोटी बात समझने को
बुद्धि भी तुम में नही है ?
—सू० ३, आ० ५८

यानी, कुरान यहूदियो और ईसाइयो से सवाल करता है कि तुम्हारी यह गिरोहबन्दियाँ ज्यादा से ज़्यादा तौरात और इन्जील के समय से शुरू होती है, तो फिर बतलाओ तौरात से पहले भी ऐसे आदमी मौजूद थे या नही जिनको ईश्वर से हिदायत मिली हो ? अगर थे, तो उनका मार्ग क्या था ? स्वयं तुम्हारे वंश के, यानी इसराईल वंश के, तमाम पैगम्बरो का मार्ग क्या था ? हजरत इब्राहीम ने अपने बेटों और पोतो को जिस धर्म की शिक्षा दी थी वह धर्म कौन सा था ? हज़रत याक़ूब मृत्यु-शय्या पर जब अपने बेटों को ईश्वरीय धर्म पर दृढ रहने का अन्तिम उपदेश दे रहे थे, तो वह धर्म कौन सा था ? ज़ाहिर है कि वह यहूदी-मत या ईसाई-मत की गिरोहबन्दी नही हो सकती, क्योंकि ये दोनों गिरोहबन्दियाँ हज़रत मूसा और हज़रत ईसा के नाम पर की गई है, और ये दोनो हज़रत इब्राहीम और हज़रत याकूब से कई सौ वर्ष बाद पैदा हुए । इसलिए सिद्ध हुआ कि इन तुम्हारे गढे हुए दायरों से परे भी मुक्ति का कोई उच्चतर मार्ग मौजूद है, जो उस समय भी मानव-समाज के सामने था जब कि तुम्हारे इन सम्प्रदायों का नाम-निशान तक न था । क़ुरान कहता है कि यही मार्ग धर्म का वास्तविक मार्ग है, और इसे प्राप्त करने के लिए किसी गिरोहबन्दी की आवश्यकता नहीं, बल्कि आवश्यकता है विश्वास और सदाचरण की ।

ام كنتم شهداء اذ حضر
يعقوب الموت اذ قال لبنيه
ما تعبدون من بعدى وقالوا
نعبد الهك واله اباءك
ابراهيم واسمعيل واسحاق
الها واحدا ونحن له مسلمون

फिर क्या तुम उस समय मौजूद थे जब याकूब के सिरहाने मृत्यु खडी थी और उसने अपनी सन्तान से पूछा था कि बतलाओ मेरे बाद तुम किसकी उपासना करोगे, उन्होने उत्तर दिया था कि हम उसी एक ईश्वर की उपासना करेंगे जिसकी तुम और तुम्हारे पूर्वजो, इब्राहीम, इस्माईल, और इसहाक़ ने की है, और हम परमात्मा के आज्ञाकारी रहेगे ?

—सू० २, आ० १२७

कुरान कहता है ईश्वरीय धर्म की जड यही है कि मनुष्यमात्र परस्पर भाई और सब एक है। उसकी जड़ भेद और घृणा नही है। ख़ुदा के जितने भी रसूल दुनिया में आये सब ने यही शिक्षा दी कि तुम सब बुनियादी तौर पर एक ही गिरोह और एक ही जाति हो, और तुम सब का पालनहार भी एक ही है। इसलिए उचित है कि सब उसी एक परवरदिगार की बन्दगी करे, और एक घराने के भाई-बन्दों की तरह मिल-जुल कर रहें। यद्यपि प्रत्येक धर्म के संस्थापक ने इसी मार्ग का उपदेश दिया था, तथापि हर धर्म के अनुयायी इस मार्ग से हट गये। परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक देश, प्रत्येक जाति, और प्रत्येक वश ने अपना अलग-अलग जत्था बना लिया और प्रत्येक जत्था अपने ही तौर-तरीकों में मग्न हो गया।

कुरान ने पिछले पैगम्बरों और धर्म-प्रवर्तकों मे से जिनके उपदेश उद्धृत किये है उन सबके सिद्धान्तों का मुख्य तत्त्व भी यही है, और प्राय अधिकांश के उपदेशो का अन्त धर्म की एकता और मनुष्य के विश्व-भ्रातृत्व पर ही होता है।

ولقد ارسلنا نوحا الى
قومه فقال يا قوم اعبدوا الله
مالكم من اله غيره - افلا
تتقون (٢٣..٢٣)

जैसे, सूरा २३ मे सबसे पहले हजरत नूह के उपदेशो का वर्णन आता है।

ثم انشانا من بعده قرنا
آخرين فارسلنا فيهم رسولا
منهم ان اعبدوا الله مالكم
من اله غيره (٣٢)

इसके बाद उन रसूलों के उपदेशों की तरफ़ इशारा किया गया है जो हजरत नूह के बाद हुए।

ثم ارسلنا موسى واخاه
هارون. (٤٧)

फिर हज़रत मूसा का ज़िक्र है।

وجعلنا ابن مريم وامه
آية (٥٢)

हज़रत मूसा के बाद हज़रत ईसा के उपदेश आते हैं।

अन्त में इन सब का जिक्र करने के बाद निम्नलिखित सच्चाई का एलान किया गया है—

يا ايها الرسل كلوا من الطيبات و اعملوا صالحا انى بما تعملون عليم۔ و ان هذه امتكم امة واحدة و انا ربكم فاتقون۔ فتقطعوا امرهم بينهم زبرا۔ كل حزب بما لديهم فرحون

और हमने सब पैगम्बरों को यही आज्ञा दी थी कि पाक और साफ चीज़े खाओ और सदाचार का जीवन व्यतीत करो। तुम जो कुछ भी करते हो उससे मै बेखबर नही हूँ। और (देखो) यह तुम्हारा गिरोह वास्तव मे एक ही गिरोह है, और मै तुम सब का पालनहार हूँ। (इसलिए अलग न हो, और) अवज्ञा से बचो। लेकिन फिर ऐसा हुआ कि लोगों ने एक दूसरे से कटकर अलग-अलग धर्म बना लिये, हर टोली के पल्ले जो कुछ पड गया वह उसी में मग्न है।—सू० २३, आ० ५३

यानी, एक के बाद दूसरे सब पैगम्बरों ने यही शिक्षा दी थी कि ईश्वर की बन्दगो करो और सदाचरण का जीवन व्यतीत करो। परमात्मा के सम्मुख तुम सब एक ही गिरोह और एक ही सम्प्रदाय हो। तुम सबका एक ही पालनहार है। तुम मे से कोई गिरोह दूसरे गिरोह को अपने से अलग न समझे और न कोई गिरोह दूसरे गिरोह का विरोधी हो। فتقطعوا امرهم بينهم زبرا लेकिन लोगो ने इस शिक्षा को भुला दिया। अपनी-अपनी अलग-अलग टोलियाँ बना ली كل حزب بما لديهم فرحون हर टोली

उसी मे मग्न है जो उसके पल्ले पड़ गया है ।

धार्मिक गिरोहबन्दी के रीति-रिवाजो में से एक रस्म वह है जिसे ईसाई-मत ने अख्तियार कर लिया और जिसे वह बप्तिस्मे के नाम से पुकारता है । वास्तव में यह एक यहूदी रस्म थी जो पापो का प्रायश्चित्त करते समय अदा की जाती थी । इसलिए उसका मूल्य एक मामूली रस्म के मूल्य से अधिक नही है । लेकिन ईसाइयों ने इसे मुक्ति और कल्याण की बुनियाद समझ ली है । जब तक कोई मनुष्य हजरत ईसा मसीह के नाम पर बप्तिस्मा न ले तब तक वह नेक और धार्मिक नही समझा जा सकता है, और न अन्त में उसे मुक्ति ही प्राप्त हो सकती है । कुरान कहता है, यह कैसी गुमराही है कि मनुष्यो की मुक्ति और उनका कल्याण जिनका दारमदार सिर्फ उनके कर्मों पर है एक विधिविशेष के साथ आवद्ध कर दिया जाय ! यह मनुष्य का ठहराया हुआ 'बप्तिस्मा' परमात्मा का बप्तिस्मा नही है । परमात्मा का बप्तिस्मा तो यह है कि तुम्हारे दिल ईश्वरनिष्ठा के रंग में रगे जायँ ।

صبغة الله - ومن احسن من الله صبغة ونحن له عابدون

यह परमात्मा का रंग है (यानी ईश्वरीय धर्म का स्वाभाविक 'बप्तिस्मा' है) और रंगने मे परमात्मा से अच्छा और कौन हो सकता है ? हम तो उसी की बन्दगी करनेवाले है । —सू० २, आ० १३८

सूरा २ मे जगह-जगह यह भी कहा गया है कि ईश्वरीय धर्म का मार्ग कर्ममार्ग है, और प्रत्येक मनुष्य के लिए वही होता है

जो उसके कर्मों की कमाई है। किसी मनुष्य की मुक्ति या उसके कल्याण मे इस बात से कोई सहायता नही मिल सकती कि उसके गिरोह में बहुत से पैग़म्बर या महान् पुरुष हो चुके है या वह नेक मनुष्यों के वश से है या किसी पिछली कौम के साथ उसका पुराना सम्बन्ध है।

تلك امة قد خلت لها ما كسبت ولكم ما كسبتم ولا تسئلون عما كانوا يعملون

यह एक कौम थी जो गुजर चुकी। उसके लिए वह था जो उसने अपने कर्मों से कमाया, और तुम्हारे लिए वह है जो तुम अपने कर्मों से कमाओ। उनके कर्मों के लिए तुमसे कोई पूछ-ताछ नही होगी।

—सू० २, आ० १२८

५. क़ुरान का उपदेश

कुरान के पृष्ठों में कोई बात भी इतनी साफ दिखाई नही देती जितनी यह कि कुरान ने बार-बार स्पष्ट और निर्णयक शब्दों मे इस सच्चाई का एलान कर दिया है कि कुरान किसी नई मजहबी गिरोहबन्दी का सन्देश लेकर ससार मे नही आया, बल्कि वह विविध धर्मो की असली लडाइयो और झगडो से ससार को मुक्त कर उन सबको उसी एक मार्ग पर एकत्र कर देना चाहता है जो सब का एक सामान्य और सर्वसम्मत मार्ग है।

क़ुरान बार-बार कहता है कि जिस मार्ग पर मै लोगो को बुलाता हूँ वह कोई नया मार्ग नही, और न सत्य का कोई नया मार्ग हो ही सकता है। मेरा मार्ग वही मार्ग है जो सनातन से चला आता है और जिसकी ओर सब धर्मो के प्रवर्तकों ने मनुष्य को बुलाया है।

شرع لكم من الدين ما وصى به
نوحا والذي اوحينا اليك وما
وصينا به ابراهيم وموسى وعيسى
ان اقيموا الدين ولا تتفرقوا فيه

और (देखो) उसने तुम्हारे लिए धर्म की वही राह ठहराई है जिसकी वसीयत नूह से की गई थी, और जिस पर चलने की आज्ञा इब्राहीम, मूसा और ईसा को दी गई थी, (इन सब की शिक्षा यही थी) कि अद्दीन (यानी परमात्मा का एक ही

दीन) क़ायम रखो और इस मार्ग में अलग-अलग न हो जाओ ।

— सू० ४२, आ० १३

सूरा ४ में आया है—

انا اوحينا اليك كما اوحينا الى نوح والنبيين من بعده واوحينا الى ابراهيم و اسمعيل و اسحاق ويعقوب والاسباط وعيسى وايوب ويونس وهارون وسليمان واتينا داؤد زبورا۔ ورسلا قد قصصناهم عليك من قبل ورسلا لم نقصصهم عليك

(ऐ पैगम्बर !) हमने तुम्हारे पास उसी तरह अपनी 'वही' (ईश्वरीय आदेश) भेजी है जिस तरह नूह के और उन सब पैगम्बरो के पास भेजी थी जो नूह के बाद हुए, और जिस तरह इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक, याकूब, याकूब के वंशजों, ईसा, अय्यूब, यूनुस, हारून, सुलैमान, इत्यादि के पास भेजी थी, और जिस तरह हमने दाऊद को ज़बूर प्रदान की थी। इनके सिवा और भी पैग़म्बर हुए है जिनमे से कुछ का हाल हम तुम्हें सुना चुके है और कुछ का नही ।

—सू० ४, आ० १६३

सूरा ६ में कुरान से पहले के रसूलो का उल्लेख करते हुए इस्लाम के पैगम्बर से कहा गया है—

اولئك الذين هدى الله
فبهدىهم اقتده

ये वे लोग है जिनको परमात्मा ने सत्य का मार्ग दिखाया। (इसलिए ऐ पैगम्बर !) तुम भी इन्ही की हिदायत का (अर्थात् इन्ही के मार्ग का) अनुसरण करो। —सू० ६, आ० ९०

इसीलिए कुरान के उपदेश की पहली बुनियाद यह है कि सब धर्मो के सस्थापकों और सब ईश्वरीय ग्रन्थो का समान रूप से समर्थन किया जाय, यानी यह विश्वास किया जाय कि वे सब सत्य पर थे, सब ईश्वर का सत्य सन्देश पहुँचानेवाले थे, और सब ने एक ही सत्य और एक ही नियम की शिक्षा दी है, और उन सब की सर्वसम्मत शिक्षा के अनुसार चलना ही हिदायत और कल्याण का सच्चा मार्ग है।

قل امنا بالله وما انزل
علينا وما انزل على ابراهيم
واسمعيل واسحاق ويعقوب
والاسباط وما اوتي موسى و
عيسى والنبيون من ربهم
لا نفرق بين احد منهم و
نحن له مسلمون

(ऐ पैगम्बर !) कह दो, हमारा तरीका तो यह है कि हम परमात्मा पर विश्वास करते है और जो कुछ आदेश हम को (ईश्वर की ओर से) दिया गया है उस पर विश्वास करते है, और जो कुछ इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक, याकूब, और याकूब के वशवालो को आदेश दिया गया था, उस सब पर विश्वास रखते

है, और इसी तरह जो कुछ मूसा, ईसा, और दुनिया के तमाम पैगम्बरों को उनके पालनहार की ओर से दिया गया है उससब पर हमारा विश्वास है। हम इनमें से किसी एक को भी दूसरे से अलग नही करते (कि उसे न माने और दूसरो को माने, हम सब का समान रूप से समर्थन करते है), और हम परमात्मा के आज्ञाकारी है। (उसकी सच्चाई जहाँ कही और जिस किसी की ज़बानी भी आई हो उस पर हमारा विश्वास है।

—स० ३, आ० ७८

कुरान ने इस आयत मे और भी अनेक स्थलो पर ईश्वर के पैगम्बरों में भेदभाव रखने को एक बहुत बड़ी गुमराही करार दिया है, और सच्चाई की राह ही यह बतलाई है कि तफरीक़-बैनर्रुसुल से इनकार किया जाय। 'तफरीक़-बैनर्रुसुल' का अर्थ यह है कि खुदा के रसूलों का समर्थन करने मे भेदभाव किया जाय, यानी यह समझना कि इनमे से अमुक सच्चा था और अमुक सच्चा न था, अथवा किसी एक की सच्चाई को मानना और दूसरे की

सच्चाई को न मानना, अथवा शेष सब की सच्चाई को मानना और किसी एक से इनकार कर देना। क़ुरान कहता है कि प्रत्येक ऐसे सच्चे व्यक्ति का, जो ईश्वरीय धर्म के मार्ग पर चलना चाहता है, यह कर्तव्य है कि वह बग़ैर किसी भेदभाव के सब पैगम्बरो, सब धर्म-ग्रन्थो, और सब धर्मों के उपदेशों पर एक समान रूप से विश्वास करे और किसी एक से भी इनकार न करे। उसका तरीक़ा यह होना चाहिए कि वह कहे कि "सच्चाई जहाँ भी प्रकट हुई है और जिस किसी के भी मुख से प्रकट हुई है सच्चाई है और उस पर मेरा विश्वास है।"

آمن الرسول بما انزل اليه
من ربه والمؤمنون ـ
كل آمن بالله وملٰئكته
وكتبه ورسله ـ لا نفرق
بين احد من رسله ـ و
قالوا سمعنا واطعنا غفرانك
ربنا واليك المصير ـ

ख़ुदा का पैगम्बर उस (ईश्वरीय वाणी) पर विश्वास रखता है जो उसके पालनहार की तरफ से उस पर उतरी है, और उसके अनुयायी भी उस वाणी पर विश्वास करते है। ये लोग परमात्मा पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसके धर्म-ग्रन्थो पर, और उसके रसूलो पर विश्वास करते हैं। (उनके विश्वास की पद्धति यही है कि वे कहते है कि) हम परमात्मा के रसूलों में से किसी को दूसरे से अलग नही करते (कि किसी एक को माने और दूसरे को न

माने। हम सब का समान रूप से समर्थन करते है। ये वे लोग है जिन्होने धर्मो के सस्थापको की पुकार सुनकर) कहा, "ऐ खुदा ! हमने तेरा सन्देश सुना और तेरी आज्ञा मानी, तेरी क्षमा हमे प्राप्त हो क्योंकि हम सबको अन्त मे लौटकर तेरी ही ओर आना है। —सू० २, आ० २८५

कुरान कहता है खुदा एक ही है, उसकी सच्चाई एक है, लेकिन उस सच्चाई का पैगाम बहुतों ने पहुँचाया है। फिर अगर तुम किसी एक पैगम्बर की बात का समर्थन करते हो और दूसरो से इनकार करते हो तो इसका मतलब यह हुआ कि एक ही सच्चाई को एक जगह मान लेते हो और दूसरी जगह ठुकरा देते हो, अथवा एक ही बात मान भी लेते हो और रद्द भी कर देते हो। ज़ाहिर है ऐसा मानना मानना नही है, बल्कि बहुत ही बुरे ढंग का इनकार है।

क़ुरान कहता है, खुदा की सच्चाई उसकी अन्य सब बातो की तरह उसकी विश्व-व्यापी देन है। वह न तो किसी युगविशेष से सम्बन्ध रखती है, न किसी वंश अथवा जातिविशेष से, और न किसी सम्प्रदायविशेष से ही। तुमने अपने लिए तरह-तरह की जातीय, भौगोलिक और वंशगत हदे बना ली है, लेकिन खुदा की सच्चाई के लिए तुम कोई इस तरह का भेदभाव नही कर सकते। खुदा की सच्चाई की न तो कोई जाति है, न कोई वंश, न कोई

भौगोलिक हदबन्दी है, और न कोई साम्प्रदायिक गिरोहबन्दी। वह खुदा के सूरज की तरह प्रत्येक स्थान में चमकती है और मनुष्यमात्र को रोशनी पहुँचाती है। अगर तुम परमात्मा की सच्चाई की खोज में हो तो उसे एक ही कोने मे मत ढूढ़ो, वह हर जगह प्रकट होती है और हर युग मे अपना प्रकाश फैलाती है। तुम्हे किसी ख़ास समय का, जाति का, देश का, भाषा का, और तरह-तरह की गिरोहबन्दी का उपासक न होकर केवल खुदा का और उसकी विश्वव्यापी सच्चाई का उपासक होना चाहिए। उसकी सच्चाई चाहे कही भी आई हो और चाहे जिस रूप मे आई हो वह तुम्हारी निधि है और तुम उसके उत्तराधिकारी हो।

इसलिए कुरान ने 'तफ़रीक बैनर्रुसुल' की राह को जहाँ-तहाँ इनकार (नास्तिकता) की राह क़रार दिया है और ईमान की राह उसके विपरीत यह बतलाई है कि बगैर भेदभाव के सबको माना जाय। कुरान कहता है कि इस ससार मे मार्ग सिर्फ़ दो ही है, तीसरा नही हो सकता। ईमान का मार्ग यह है कि सबको मानो, इनकार की राह यह है कि सबका या किसी एक का इनकार करो। यहाँ किसी एक के इनकार का भी वही अर्थ है जो सबके इनकार का है।

ان الذين يكفرون بالله و رسله ويريدون ان يفرقوا بين الله ورسله ويقولون نؤمن ببعض ونكفر ببعض

जो लोग परमात्मा और उसके पैगम्बरों को नही मानते और चाहते हैं कि परमात्मा और उसके पैगम्बरों में भेद करे (यानी किसी को ख़ुदा का रसूल मानें और किसी को न मानें),

ويريدون ان يتخذوا بين ذلك سبيلا اولئك هم الكافرون حقا. واعتدنا للكافرين عذابا مهينا. والذين آمنوا بالله ورسله ولم يفرقوا بين احد منهم اولئك سوف يوتيهم اجورهم. وكان الله غفورا رحيما.

और कहते है कि इनमे से किमी को हम मानते है और किसी को नही मानते, फिर चाहते है कि (अविश्वास और विश्वास के) बीच का कोई तीसरा मार्ग अख़्तियार कर ले। विश्वास करो, ये ही लोग है जिनके अविश्वास (कुफ़्र) मे कोई शक नही। जिन लोगो की राह अविश्वास की राह है उनके लिए उन्हे अपमानित करने-वाला ईश्वरीय कोप तैयार है। लेकिन जो लोग परमात्मा और उसके सब पैग़म्बरो पर विश्वास करते है और किसी एक पैग़म्बर को भी दूसरे से पृथक् नही करते (यानी किसी एक की सच्चाई से भी इनकार नही करते), निस्सन्देह ये ही लोग है जिन्हें परमात्मा शीघ्र उनके सुकर्मो का फल देगा। वह बड़ा ही दयालु और कृपालु है।

—सू० ४, आ० १४६

सूरा २ में सच्चे विश्वासी की राह यह बतलाई गई है—

والذين يؤمنون بما انزل
اليك وما انزل من قبلك
وبالآخرة هم يوقنون. اولئك
على هدى من ربهم واولئك
هم المفلحون.

और वे लोग जो उस सच्चाई पर विश्वास करते है जो इस्लाम के पैगम्बर पर प्रकट हुई है और उन सब सच्चाइयों पर भी विश्वास करते है जो इस्लाम से पहले दुनिया में प्रकट हो चुकी है, और जो आखिरत (आइन्दा) की जिन्दगी पर भी विश्वास रखते है, ये ही लोग है जो अपने परवरदिगार की ठह-राई हुई हिदायत पर है, और ये ही है जिन्होने कल्याण प्राप्त किया है। —सू० २, आ० २

कुरान कहता है, अगर तुम्हे इस बात से इनकार नही है कि समस्त विश्व का सृजनहार एक ही है और वही परवरदिगार समान रूप से प्राणीमात्र का भरण-पोषण कर रहा है, तो फिर तुम इस बात से कैसे इनकार कर सकते हो कि उसके आध्यात्मिक सत्य का नियम भी एक ही है, और वह नियम भी एक ही तरह पर मनुष्यमात्र को दिया गया है ? क़ुरान कहता है, तुम सबका परवरदिगार एक है, तुम सब एक ही परमात्मा के नाम-लेवा हो, तुम सबके पथ-प्रदर्शकों ने तुम्हें एक ही पथ दिखलाया है, फिर यह कैसी गुमराही की पराकाष्ठा और बुद्धि का दिवाला है कि सूत्र एक है, लक्ष्य एक है, लेकिन एक समुदाय दूसरे समुदाय का शत्रु है, एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से घृणा करता है, और फिर ये सब लड़ाई-

झगड़े किस के नाम पर किये जाते है ? उसी परमात्मा और उसी परमात्मा के धर्म के नाम पर जिसने सबको एक ही चौखट पर झुकाया था और सबको एक भ्रातृत्व के सूत्र मे बाँधा था ।

قل یا اهل الکتاب هل
تنقمون منا الا ان امنا بالله
وما انزل الینا وما انزل من
قبلک وان اکثرهم فاسقون

इन लोगों से कहो कि ऐ धर्म-ग्रथवालो ! तुम जो हमारा विरोध करने के लिए कटिबद्ध हो गये हो तो बतलाओ, इसके सिवा हमारा क्या अपराध है कि हम परमात्मा पर विश्वास करते है और जो कुछ सत्य हम पर प्रकट हुआ है और जो कुछ हम से पहले प्रकट हो चुका है, उस सब पर विश्वास रखते है ? (फिर क्या ईश्वर की उपासना करना और उसके पैग़म्बरो का समर्थन करना तुम्हारे निकट अपराध और ऐब है ? अफ़सोस तुम पर!) तुम मे अधिकांश ऐसे ही है जो सत्य के मार्ग से सर्वथा पृथक् हैं । —सू० ५, आ० ६४

ان الله ربی وربکم فاعبدوه
هذا صراط مستقیم

देखो, ख़ुदा तो मेरा और तुम्हारा दोनों का परवरदिगार है । इसलिए उसकी उपासना करो, यही धर्म का सीधा मार्ग है । —सू० १९, आ० ३९

قل اتحاجوننا في الله وهو
ربنا وربكم۔ ولنا اعمالنا ولكم
اعمالكم ونحن له مخلصون۔

(ऐ पैगम्बर ! इन से) कहो, क्या तुम परमात्मा के विषय मे हम से झगड़ा करते हो यद्यपि हमारा और तुम्हारा दोनो का पालनहार वही है, और हमारे लिए हमारे कर्म है, तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म (यानी प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मानुसार फल भोगना है; फिर इस बारे मे झगडा क्यो करते हो) ?

—सू० २, आ० १३९

यह बात याद रखनी चाहिए कि कुरान मे जहाँ कही किसी को सम्बोधन किया गया है, जैसे कि ऊपर की आयत मे "इन्नल्लाह रब्बी व रब्बु-कुम्," अर्थात् परमात्मा मेरा और तुम्हारा दोनो का प्रतिपालक है । अथवा, 'इलाहुना व इलाहुकुम् वाहिद'–हमारा और तुम्हारा दोनों का ख़ुदा एक ही है, अथवा, 'अ तोहाज्जूनना फ़िल्लाहि व होव रब्बुना व रब्बुकुम् व लना अअमालुना व लकुम् अअमालुकुम्,' अर्थात् 'क्या तुम खुदा के बारे में हम से झगड़ा करते हो यद्यपि हमारा और तुम्हारा सब का पालनहार वही है और हमारे लिए हमारे कर्म और तुम्हारे लिए तुम्हारे,'—वहाँ-वहाँ इन सब उक्तियों का उद्देश्य इसी तत्त्व पर जोर देना है, यानी जब सब का पालनहार एक ही है, और प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मानुसार ही फल मिलते है, तो फिर ख़ुदा और धर्म के नाम पर संसार भर मे ये लडाई और झगड़े क्यो है ? क़ुरान बार-बार कहता है कि मेरी शिक्षा इसके

सिवा और कुछ नही है कि ईश्वर की उपासना और सदाचरण ही मनुष्य का कर्त्तव्य है, मै किसी धर्म को झूठा नही कहता, मै किसी धर्म के प्रवर्तक से इनकार नही करता, सबका समान रूप से समर्थन करता हूँ, और उन सबकी सामान्य और सर्वसम्मत शिक्षा ही मेरी शिक्षा है, फिर मेरे विरुद्ध समस्त धर्मानुयायियो ने लडाई का एलान क्यो कर दिया है ?

यही कारण है कि कुरान ने किसी भी धर्म के अनुयायी से यह नही चाहा कि वह कोई नया मत अथवा नया सिद्धान्त स्वीकार करे, बल्कि कुरान हर गिरोह के सामने यही माँग पेश करता है कि तुम अपने धर्म की वास्तविक शिक्षा पर सच्चाई के साथ अमल करो। क़ुरान कहता है कि अगर तुमने ऐसा कर लिया तो मेरा काम पूरा दो गया, क्योकि मेरा सन्देश कोई नया सन्देश नही है बल्कि वही सनातन सार्वभौमिक सन्देश है जो समस्त धर्म-सस्थापकों ने दिया है।

قل يا اهل الكتاب لستم على شئ حتى تقيموا التورية والانجيل وما انزل اليكم من ربكم وليزيدن كثيرا منهم ما انزل اليك من ربك طغيانا وكفرا. فلا تاس على القوم الكافرين - ان الذين امنوا

(ऐ पैग़म्बर !) कह दो कि ऐ धर्म-ग्रन्थवालो ! जब तक तुम तौरात और इञ्जील पर और उन सब धर्म-ग्रन्थो पर जो तुम पर प्रकट हुए है, ठीक-ठीक अमल नही करोगे तब तक तुम्हारे पास धर्म का कोई अंश भी नही है। और (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारे पालनहार की ओर से जो कुछ सत्य तुम्हारे ऊपर प्रकट हुआ है, (बजाय इसके कि ये लोग उससे

والذين هادوا والصابئون
والنصارى من آمن بالله
واليوم الآخر وعمل صالحا
فلاخوف عليهم ولاهم
يحزنون.

हिदायत हासिल करे, तुम देखोगे कि) इनमें से बहुतों का अविश्वास और उनकी उद्दण्डता और भी ज्यादा बढ जायगी। जिन लोगो ने सच्चाई की जगह सत्य से इनकार करने की राह ग्रहण कर ली है, (वे कभी माननेवाले नही है)। तुम इनकी हालत पर व्यर्थ अफसोस मत करो। चाहे कोई तुम्हारी बताई हुई राह का माननेवाला हो, चाहे कोई यहूदी हो, चाहे ईसाई हो, चाहे साबी हो, या कोई और हो, (ईश्वर का क़ानून यह है कि) जो कोई भी परमात्मा पर और आख़िरत के दिन (अर्थात् अन्त में सबको अपने-अपने कर्मो के फल मिलने के दिन) पर विश्वास करता है, और उसके कर्म भी अच्छे हैं, तो उसके लिए न तो किसी प्रकार का खटका है और न किसी प्रकार का शोक। —सू० ५, आ० ७३

यही कारण है कि कुरान ने उन सब सत्यनिष्ठ मनुष्यो के विश्वास और व्यवहार को पूरी उदारता के साथ ठीक बताया है

जो कि क़ुरान के आविर्भाव के समय भिन्न-भिन्न धर्मों में मौजूद थे और जिन्होने अपने-अपने धर्मो के वास्तविक सार को नष्ट नही किया था। यह ठीक है कि क़ुरान ऐसे लोगों की संख्या को बहुत ही कम बताता है, और कहतता है कि अधिकतर सख्या उन्ही लोगो की है जिन्होंने ईश्वरीय धर्म की विश्वास-सम्बन्धी और व्यवहार-सम्बन्धी सच्चाई को एकबारगी नष्ट कर दिया है।

ليسوا سواء - من اهل
الكتاب امة قائمة يتلون
آيات الله آناء الليل وهم
يسجدون - يؤمنون بالله
واليوم الآخر ويأمرون بالمعروف
وينهون عن المنكر ويسارعون
فى الخيرات واولئك من
الصالحين - وما يفعلون من
خير فلن تكفروه - والله عليم
بالمتقين

यह बात नही है कि सब लोग एक ही तरह के हो। इन्ही धर्म-ग्रन्थवालो में कुछ ऐसे भी है जो वास्तविक धर्म मे कायम है। वे रात को उठ-उठ का ईश्वर की वाणी (धर्म-ग्रन्थों) का पाठ करते है और प्रभु के सम्मुख नतमस्तक रहते है। वे ईश्वर पर और आखिरत के दिन पर विश्वास करते है, नेका की आज्ञा देते है, बुराई से रोकते है और स्वय नेकी की राह मे तेज-कदम है। निस्सन्देह वे नेक मनुष्यो मे से है। याद रखो, ये लोग जो कुछ भी नेकी करते है, हरगिज ऐसा नही होगा कि उसकी क़द्र न की जाय और वह नष्ट हो जाय। मनुष्यो का

हाल परमात्मा से छिपा नही है। वह जानता है कि कौन धर्म-निष्ठ है और कौन नही।

—सू० ३, आ० १११

منهم امة مقتصدة و
كثير منهم ساء ما يعملون-

उनमे से एक गिरोह ऐसे लोगों का है जो बीच के रास्ते पर है। लेकिन अधिक संख्या ऐसे ही लोगों की है जो जो कुछ करते है बहुत बुरा करते है।

—सू० ५, आ० ७१

कुरान जगह-जगह अपने से पहले के धर्म-ग्रन्थो का समर्थन करता है, और इस बात पर जोर देता है कि वे झूठे नही है। अन्य धर्म-ग्रन्थवालों से क़ुरान बार-बार कहता है—'व आमिनू बिमा अन्ज-ल्तो मुसद्दिकल्लिमा मअकुम् (२. ३८) यानी उस किताब पर विश्वास करो जो तुम्हारी किताब का समर्थन करती हुई प्रकट हुई है। इन सबसे क़ुरान का उद्देश्य उसी सच्चाई पर ज़ोर देना है, यानी यह कि जब मेरी शिक्षा तुम्हारे पवित्र ग्रन्थों के विरुद्ध कोई नई बात पेश नही करती और न उनसे तुम्हें पृथक् करना चाहती है, बल्कि सब तरह से उनकी पुष्टि और उनका समर्थन करती है, तो फिर तुम में और मुझ मे लड़ाई क्यों हो? तुम मेरे विरुद्ध युद्ध की घोषणा क्यो करते हो?

क़ुरान ने नेकी के लिए 'मारूफ' का, और बुराई के लिए 'मुन्कर' शब्द का उपयोग किया है। 'वअमुर् बिल मारूफे वन्ह अनिल् मुनकर' (३१. ३६)'। 'मारूफ' 'अरफ' धातु से है जिसका

अर्थ पहचानना है। इसलिए मारूफ वह बात हुई जो जानी-पहचानी हुई हो। 'मुनकर' का अर्थ इनकार करना है, यानी ऐसी बात जिससे आम तौर पर इनकार किया गया हो। कुरान ने नेकी और बुराई के लिए इन शब्दों का उपयोग इसलिए किया है क्योकि वह कहता है ससार मे विश्वास और विचारो की भिन्नता कितनी ही क्यों न हो, कुछ बाते ऐसी है जिनके अच्छे होने में सभी सहमत है, और कुछ ऐसी है जिनके बुरे होने मे सब की एक राय है। जैसे इन बातों मे भी सभी एक मत है कि सच बोलना अच्छा है और झूठ बोलना बुरा, ईमानदारी अच्छी बात है, और बेईमानी बुरी। इसमे भी किसी का मतभेद नही कि मात-पिता की सेवा, पडोसियो से सद्व्यवहार, दरिद्रो की खबर लेना, पीडितों की सहायता करना, ये सब अच्छे काम है। और अन्याय और अत्याचार बुरे काम है। अर्थात् ये वे बाते हुई जिनकी अच्छाई आम तौर पर जानी-बूझी हुई है और जिनके विरुद्ध चलना आम तौर पर अनुचित और निन्दनीय है। ससार के सब धर्म, ससार के सब आचार, ससार की सारी बुद्धिमत्ता, संसार के सब समाज, दूसरी बातों मे चाहे जितना मतभेद रखते हो, लेकिन जहाँ तक इन कामों का सम्बन्ध है सब एक मत है।

कुरान कहता है, ईश्वरीय धर्म उन्ही कामों को मनुष्य का आवश्यक कर्तव्य करार देता है जिनकी अच्छाई आम तौर पर मनुष्य-समाज ने समझ ली है। इसी तरह उन सब कामों को ईश्वरीय धर्मनिषिद्ध क़रार देता है जिन्हे आम तौर पर लोग अस्वीकार करते है और जिन्हे बुरा कहने मे सभी धर्म सहमत है। यह बात चूँकि धर्म का मौलिक तत्त्व थी इसलिए इसमे मतभेद न हो सका

और विविध मजहबी गिरोहों में अगणित गुमराहियों के होते हुए तथा उनके अनेक सच्चाइयो को भुला देने पर भी, यह सच्चाई सदा प्रकट और सर्वमान्य बनी रही। इन कामो की अच्छाई और बुराई पर ससार भर के अन्दर सब युगो, सब धर्मों और सब क़ौमों के लोग सहमत है, इसी से इन बातो की इलहामी असलीयत अर्थात् उनका ईश्वर की ओर से मनुष्य को आदेश होना साबित होता है। इसलिए जहाँ तक कर्मों का सम्बन्ध है, कुरान उन्ही बातो के करने की आज्ञा देता है जिनकी अच्छाई सब की जानी हुई है और उन्ही बातों से रोकता है जिनसे आमतौर पर मनुष्यमात्र ने इनकार किया है, यानी 'मारूफ' की आज्ञा देता है, और 'मुन्कर' से रोकता है। इसलिए कुरान कहता है कि जब मेरे उपदेश का यह हाल है तो फिर किसी भी व्यक्ति को, जिसको नेकी और सच्चाई से विरोध नहीं, मुझ से विरोध क्यों हो ?

कुरान कहता है, यही कर्ममार्ग मनुष्य-समाज के लिए ईश्वर-निर्द्धारित प्राकृतिक धर्म (दीन) है, और प्रकृति के नियमों मे कभी अन्तर नही पड सकता, और यही 'अद्दीनुल् कय्यिम' यानी सीधा और दुरुस्त धर्म है, जिसमे किसी प्रकार का टेढापन या कच्चापन नहीं है। यही 'हनीफ' (सीधा) धर्म है, जिसका उपदेश हजरत इब्राहीम ने किया था। इसी का नाम क़ुरान की भाषा में 'अल्-इस्लाम' है जिसका अर्थ है ईश्वर के बनाये हुए नियमों का पालन करना।

فاقم وجهك للدين حنيفا فطرت الله التى فطر الناس عليها. لا تبديل لخلق الله ذلك الدين القيم ولكن اكثر الناس لا يعلمون. منيبين اليه واتقوه واقيموا الصلوٰة ولا تكونوا من المشركين من الذين فرقوا دينهم وكانوا شيعا كل حزب بما لديهم فرحون.

धर्म (दीन) की राह में हर तरफ़ से मुँह फेरकर सिर्फ़ एक परमात्मा ही की तरफ़ रुख कर लो। यही ईश्वरनिर्द्धारित प्रकृति है जिसके अनुसार उसने मनुष्य को पैदा किया है, इसमें कभी परिवर्तन नही होता। यही धर्म का सीधा मार्ग है। लेकिन प्रायः मनुष्य ऐसे है जो इसे नही जानते। उसी (एक परमात्मा) की ओर दृष्टि लगाये रखो, उसकी अवज्ञा से बचो। नमाज़ क़ायम करो और मुश्रिकों में से न हो जाओ, जिन्होने अपने धर्म के टुकड़े-टुकड़े करके अलग-अलग गिरोहबन्दियाँ कर लीं। हर गिरोह के पास जो कुछ है वह उसी मे मग्न है।

—सू० ३०, आ० ३०-३२

क़ुरान कहता है, ईश्वर का ठहराया हुआ धर्म (दीन) जो कुछ है वह यही है। इसके सिवा जो कुछ बना लिया गया है वह मनुष्य की गढी हुई गिरोहबन्दियों का फल है। इसलिए अगर तुम ईश्वरोपासना के तत्त्व पर, जो तुम सबके यहाँ धर्म की जड़ है, एकत्र हो जाओ और अपनी गढ़ी हुई गुमराहियों को छोड़ दो, तो मेरा उद्देश्य

पूरा हो गया। मै इससे ज़्यादा कुछ नही चाहता।

ان الدین عند الله الاسلام
وما اختلف الذین اوتوا الکتاب
الا من بعد ما جاء هم العلم
بغیا بینهم ومن یکفر بایات
الله فان الله سریع الحساب
فان حاجوک فقل اسلمت
وجهی لله ومن اتبعن وقل
للذین اوتوا الکتاب
والامیین ءاسلمتم فان
اسلموا فقد اهتدوا. وان
تولوا فانما علیک البلاغ۔
والله بصیر بالعباد۔

परमात्मा के नजदीक धर्म एक ही है, और वह 'अल्-इस्लाम' है, और यह जो धर्म-ग्रन्थवालो ने विभिनन्ता डाल दी (एक धर्म पर एकत्र रहने को जगह, यहूदी-मत और ईसाईमत की गिरोह-बन्दियो मे बट गये), यह इसलिए हुआ कि यद्यपि ज्ञान और सत्य की राह उन पर खुल चुकी थी लेकिन आपस की जिद और विद्रोह के कारण अलग हो गये। (स्मरण रखो) जो कोई ईश्वर की आज्ञाओ से इनकार करता है, ईश्वर के कर्मफल-सम्बन्धी नियम भी उससे हिसाब लेने में वैसे ही तेज़ है। फिर अगर यह लोग तुम से इस बारे में झगड़ा करे तो (ऐ पैग़म्बर!) तुम उनसे कहो कि मेरी और मेरे अनुयायियों की राह तो ईश्वर के आगे बन्दगी में सर झुका देना है और हमने सर झुका दिया है। फिर धर्मग्रन्थवालों से और

अशिक्षित लोगों से (यानी अरब
के मुश्रिकों से) पूछो कि तुम भी
परमात्मा के आगे झुकते हो या
नही (यानी झगडे की सारी बाते
छोड़ो और यह बतलाओ कि
तुमको खुदापरस्ती स्वीकार है
या नही)? अगर वे झुक गये तो
(सारा झगडा खत्म हो गया
और) उन्होने राह पा ली, अगर
वे मुँह मोडे तो (फिर जिन लोगों
को ईश्वर-भक्ति की ऐसी स्पष्ट
बातो से भी इनकार है उनके
साथ वाद-विवाद और कलह करने
से क्या लाभ)? तुम्हारे ज़िम्मे
जो कुछ है वह यही है कि सत्य
का सन्देश पहुँचा दो, बाकी सब
कुछ परमात्मा पर छोड़ दो।
परमात्मा से बन्दों का हाल छिपा
नही है। (सू० ३, आ० १८,१९)

कुरान ने धर्म के लिए 'अल्-इस्लाम' शब्द का इसलिए उपयोग किया है कि 'इस्लाम' का अर्थ किसी बात को मान लेने और आज्ञा-पालन करने का है। कुरान कहता है कि धर्म की अस्लीयत यही है कि ईश्वर ने जो कल्याण का मार्ग मनुष्य के लिए निश्चित कर दिया है उसका ठीक-ठीक अनुसरण किया जाय। वह कहता है कि यह

मार्ग केवल मनुष्य ही के लिए नही है बल्कि समस्त सृष्टि इसी नियम पर क़ायम है। सब की स्थिरता और उनके कायम रहने के लिए ईश्वर ने कोई न कोई कर्म-मार्ग स्थिर कर दिया है, और सब उसी का अनुसरण करते है। यदि एक क्षण के लिए भी वे उससे विमुख हों तो सारी सृष्टि छिन्न-भिन्न हो जाय।

افغير دين الله يبغون و له اسلم من فى السموت و الارض طوعا و كرها و اليه يرجعون.

फिर क्या ये लोग चाहते है कि परमात्मा का ठहराया हुआ धर्म छोड़कर कोई दूसरा धर्म खोज निकाले जब कि पृथ्वी और आकाश में जितने प्राणी हैं सब, चाहे या न चाहें, उसी के ठहराये हुए कर्म-मार्ग पर चल रहे हैं और (अन्त में) सब को उसी की ओर लौटना है।

—सू० ३, आ० ८२

क़ुरान जब कहता है कि 'अल्-इस्लाम' के अतिरिक्त और कोई धर्म परमात्मा के निकट मान्य नही तो इसका मतलब यही होता है कि उस ईश्वरीय धर्म के सिवा जो एक ही है और जिसकी शिक्षा समस्त पैगम्बरों ने समान रूप से दी है मनुष्यनिर्मित कोई भी गिरोहबन्दी मान्य नही हो सकती। सूरा ३ में, जहाँ यह वर्णन आया है कि ईश्वरीय धर्म का मार्ग सभी धर्म-प्रवर्त्तकों का समर्थन करने और उनका अनुसरण करने का मार्ग है, वही साथ-साथ यह भी कहा गया है—

ومن يبتغ غير الاسلام
دينا فلن يقبل منه وهو
فى الآخرة من الخاسرين

और जो कोई इस्लाम के सिवा (जो विश्वव्यापी सत्य और सब के समर्थन का मार्ग है) कोई दूसरा धर्म चाहेगा, तो याद रखो, उसकी राह कभी स्वीकार नही की जायगी, और वह अन्त मे देखेगा कि उसका स्थान लाभ उठानेवालो मे नही, बल्कि नुक-सान उठानेवालों में है ।

—सू० ३, आ० ८४

इसीलिए कुरान अपने समस्त अनुयायियों को बार-बार साव-धान करता है कि धर्म में भेद डालने और गिरोहबन्दी करने से बचो, और फिर से उसी गुमराही में न पड़ जाओ जिससे मैंने तुम्हे छुटकारा दिलाया है। क़ुरान कहता है कि मेरे उपदेश ने मनुष्यमात्र को, जो धर्म के नाम पर एक दूसरे के शत्रु हो रहे थे, ईश्वरनिष्ठा के मार्ग में इस तरह मिला दिया कि वे एक दूसरे के लिए प्राण न्योछावर करनेवाले भाई भाई बन गये। एक यहूदी जो पहले हज़रत ईसा का नाम सुनते ही घृणा से मर जाता था, एक ईसाई जो हर यहूदी के खून का प्यासा था, एक पारसी जिसके नज़दीक सब गैर-पारसी अपवित्र थे, एक अरब जो अपने सिवा सब को सभ्यता और गुणो से वञ्चित समझता था, एक साबी जो यह विश्वास करता था कि संसार का सनातन सत्य सिर्फ़ मेरे ही हिस्से मे पड़ा है, इन सब को क़ुरान के उपदेश ने एक पंक्ति में खड़ा कर दिया, और अब यह सब परस्पर घृणा करने के बदले एक दूसरे के धर्म-प्रवर्तकों का समर्थन

करते हैं, और सब की बतलाई हुई सर्वसम्मत हिदायत पर चलते है।

واعتصموا بحبل الله جميعا
ولا تفرقوا۔ واذكروا نعمت
الله عليكم اذ كنتم اعداء
فالف بين قلوبكم فاصبحتم
بنعمته اخوانا۔ وكنتم على
شفا حفرة من النار فانقذكم
منها كذلك يبين الله لكم
ايٰته لعلكم تهتدون۔

और (देखो), सब मिल-जुल कर परमात्मा की रस्सी मज़बूती से पकड़ लो और पृथक्-पृथक् न हो। परमात्मा ने तुम्हारे ऊपर जो दया और अनुकम्पा की है उसे स्मरण रखो। तुम्हारा हाल यह था कि एक दूसरे के शत्रु हो रहे थे, लेकिन ईश्वर ने तुम्हारे हृदय मे पारस्परिक प्रेम उत्पन्न कर दिया, फिर ऐसा हुआ कि तुम भाई-भाई हो गये और (देखो), तुम्हारा तो यह हाल था कि मानो धधकती आग के गड्ढे के किनारे खड़े थे लेकिन ईश्वर ने तुम्हें इस ख़तरे से बचा लिया (और जीवन तथा सफलता के राजमार्ग पर पहुँचा दिया)। परमात्मा इसी तरह अपनी निशानियों का तुम्हें परिचय दिया करता है ताकि तुम हिदा-यत पाओ (और गुमराही से बचो)। —सू० ३, आ ९८।

ولا تكونوا كالذين تفرقوا واختلفوا من بعد ما جاء هم البينات . واولئك لهم عذاب عظيم .

और (देखो), उन लोगों की सी चाल मत स्वीकार कर लेना जो (एक धर्म पर स्थिर रहने के बदले) अलग-अलग हो गये और जिन्होने आपस मे विरोध पैदा कर लिये, यद्यपि प्रमाण उनके सामने आ चुके थे। (याद रखो) यह वे लोग है जिनके लिए (सफलता और कल्याण की जगह) भयकर कष्ट है।

—सू० ३, आ० १०१

وان هذا صراطي مستقيما فاتبعوه . ولا تتبعوا السبل فتفرق بكم عن سبيله . ذلكم وصلكم به لعلكم تتقون .

और (देखो), यह मेरी राह है बिलकुल सीधी राह, इसलिए इसी एक राह पर चलो और तरह-तरह के मार्गो के पीछे न पडो। वे तुम्हे ईश्वरीय मार्ग से हटाकर पृथक्-पृथक् कर देगे। यही बात है जिसके लिए खुदा तुम्हे आज्ञा देता है ताकि तुम अवज्ञा से बचो।

—सू० ६, आ० १५५